श्री कृष्ण कृपा

सत्संग-सेवा-सुमिरन एवं सद्भावना का प्रकाश स्तम्भ

श्री कृष्ण कृपा संजीवनी

मासिक पत्रिका
फरवरी 2023

GLOBAL INSPIRATION & ENLIGHTENMENT ORGANIZATION OF BHAGWAD GITA
GIEO GITA

महाकाल नगरी उज्जैन में पू. शान्ति स्वरूपानन्द जी के सौजन्य से सन्त समागम कार्ष्णि महाराज श्री, ऋतम्भरा जी एवं.....

लखनऊ में महर्षि महेश योगी जयन्ती पर आयोजन राजनाथ जी, सुधांशु जी एव अन्य

उज्जैन महाकाल दर्शन भाव

पूज्य कार्ष्णि महाराज श्री का स्नेह-कैलाश विजय वर्गीय जी

अनूठा मन्दिर खाटू श्याम - दिल्ली धाम

कुरुक्षेत्र में आयोजित
राष्ट्रीय अधिवक्ता परिषद अधिवेशन

हिन्दू धर्म आचार्य सभा बैठक

डेरा भुमण्ण शाह, सिरसा

स्वामी नारायण संस्था - पू. प्रमुख स्वामी जन्म शताब्दी समारोह अहमदाबाद

RIN-UPHIN/1999/06381
Postage Regd MTR-50/23-25
Date of Publication 25th of Every Month
Date of Post 29th-30th of Every Month

अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव (कुरुक्षेत्र) में भारत की माननीया राष्ट्रपति श्रीमति द्रोपदी मुर्मू जी का आगमन

शुभारम्भ-सम्पूर्ण गीता यज्ञ में पूर्णाहूति एवं दीप प्रज्वलन

गीता की वैश्विक आवश्यकता-सैमिनार

सन्त सम्मेलन- पूज्य सन्त एवं हरियाणा-पंजाब राज्यपाल

केन्द्रिय मन्त्री भूपेन्द्र यादव को गीता प्रेरणा

ब्रह्मसरोवर दिव्यता आरती-दीपदान-समापन

ॐ

सत्संग, सेवा, सुमिरन
और सद्भावना का प्रकाश स्तम्भ

श्री कृष्ण कृपा संजीवनी

वर्ष-25
फरवरी-2023
अंक-02

माघ
फाल्गुन
सम्वत्
2079 वि.

मंगलाचरण

यन्नाधेयं म्रियमाण आतुरः पतन्।
स्खलन् वा विवशौ गृणन् पुमान्॥
विमुक्त-कर्मार्गल उत्तमां गतिं।
प्राप्नोति यक्ष्यन्ति न तं कलौ जनाः॥ *श्रीमद्भागवत 12/3/44*

भावार्थ - मनुष्य मरने के समय आतुरता की स्थिति में अथवा गिरते या फिसलते समय विवश होकर भी यदि भगवान् के किसी एक नाम का उच्चारण कर ले तो उसके सारे कर्म-बन्धन छिन्न-भिन्न हो जाते हैं और उसे उत्तम गति प्राप्त होती है। परन्तु हाय रे कलियुग! कलियुग से प्रभावित होकर लोग उन भगवान् की आराधना से भी विमुख हो जाते हैं।

लक्ष्य अच्छा, भाव सच्चा
और विश्वास पक्का-
'श्री कृष्ण कृपा' स्वतः अनुभव होगी।

मुख्यालय
श्रीकृष्ण कृपा धाम, परिक्रमा मार्ग
वृन्दावन-281121 (मथुरा) उ.प्र.
फोन : 8899363611/22, 9368311113
E-mail : gieogita@gmail.com Website : gieogita.org

अधिष्ठाता : ठाकुर श्री श्री कृपा बिहारी जी

प्रेरणा-स्त्रोत : ब्रह्मलीन सद्गुरुदेव स्वामी श्री गीतानन्द जी महाराज

संस्थापक/संरक्षक : म.मं.गीता मनीषी स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी महाराज

मुद्रक / प्रकाशक : श्री नरेन्द्र कुमार-9354627999

सम्पादक : श्री गोपाल चतुर्वेदी

सदस्यता शुल्क

एकप्रति	: रु. 15/-
द्विवार्षिक	: रु 300/-
पंच वर्षीय	: रु 650/-
दस वर्षीय	: रु1200/-

2023

अनुक्रमणिका

1. मंगलाचरण 3
2. अनुक्रमणिका, व्रत उत्सव 4
3. गुरुदेव की पाती..... 5
4. सम्पादकीय 6
5. श्रीमद्भगवद्गीता.....7
6. स्वामी रामतीर्थ जी.....8
   - श्यामलाल कश्यप
7. गीता चिन्तन.....9
   - पूज्य गुरुदेव स्वामी गीतानन्द जी महाराज (वीर जी)
8. गीता प्रेरणा.....10-11
   - गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज
9. एक पूर्ण पुस्तक है श्रीमद्भगवद्गीता.....12-13
   - सुमित गोयल
10. अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव.....14-16
    - उपेन्द्र सिंघल
11. परिवेश ही शिव है.....17
    - श्री श्री रवि शंकर जी
12. मानस गीता.....18-19
    - वन्दना तनेजा
13. गीता और विज्ञान.....20-21
    - डा. मार्कण्डेय आहूजा
14. जिज्ञासा समाधान.....22-23
    - गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज
15. ज्ञान साधना.....24
    - गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज
16. सन्त उद्बोधन.....25
    - ब्रह्मलीन स्वामी शरणानन्द जी महाराज
17. श्री राम कथा (मानस गीता).....26-27
    - सुमित गोयल
18. शर्मिन्दगी! शर्मिन्दगी!!.....28
    - गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज
19. आओ जाने कान्हा के ब्रज को.....29
    - सत्यनारायण
20. समाचार दर्शन.....30
21. समाचार दर्शन.....31
22. हिन्दु संस्कृति.....32-33
    - म.मं. अर्जुनपुरी जी महाराज
25. मन क्या है?.....34
    - स्वामी शिवानन्द सरस्वती जी महाराज (डिवाइन लाइफ)

व्रत-पर्व-उत्सव (फरवरी)

तिथि	वार	दिनांक	पर्व
एकादशी	बुध	1	जया एकादशी व्रत
पूर्णिमा	रवि	5	माघ पूर्णिमा गरू रविदास जयन्ती
अष्टमी	सोम	13	कुम्भ संक्रान्ति
एकादशी	गुरू	16	विजया एकादशी
त्रयोदशी	शनि	18	महा शिवरात्रि व्रत
अमावस्या	सोम	20	सोमवती अमावस्या

पूज्य महाराज श्री जी के आगामी कार्यक्रम

1 से 3 फरवरी	ऊना (हि.प्र.) गीता सत्संग 8219973669, 9417408590, 9812257014
5 से 7 फरवरी	बरेली गीता सत्संग 9760283190, 9897023067, 8171282222
8 फरवरी	श्रीवृन्दावन 8899363611/22, 9368311113
16 से 17 फरवरी	सहारनपुर गीता सत्संग 9219882377, 7983336824
18 फरवरी	कुरुक्षेत्र 7027001891
20 से 25 फरवरी	श्री वृन्दावन (21 से 23 फरवरी रमण रेती उत्सव) 24-25 पाटोत्सव 8899363611/22, 9368311113

आस्ट्रेलिया सत्संग प्रवास

27 फरवरी से 6 मार्च

27 फरवरी पर्थ 0061- 426-441-259

28 फरवरी एडिलेड 0061- 430-540-555

2 मार्च मेलबर्न 0061- 469-216-726

3 से 6 मार्च सिडनी 0061- 403-657-089

भारत में सम्पर्क : 9896149121, 9215665444

8 मार्च	होली उत्सव करनाल-कुरुक्षेत्र 9996211111, 9812454054
9 से 11 मार्च	पलवल गीता सत्संग 9812088839, 9812359950

पूज्य महाराज श्री से सोशल मीडिया द्वारा जुड़ने हेतु :

Facebook, Instagram, Twitter, YouTube, Koo पर

gitamanishi

को फॉलो करें।

Whatsapp :- 9354626999

गुरुदेव की पाती

श्री कृष्ण कृपा

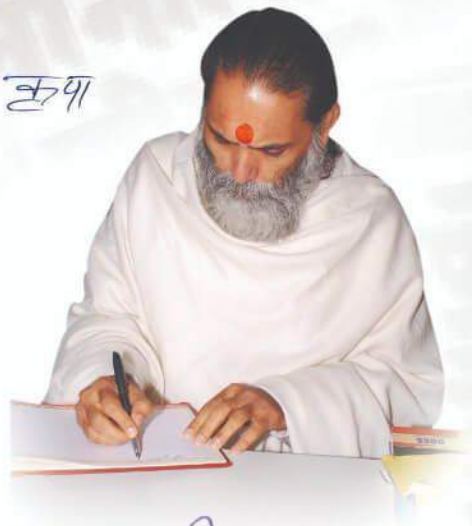

गीता प्रिय साधक,

जय श्री कृष्ण !

अर्जुन की वाणी पर 'स्थित प्रज्ञ' शब्द लगना सामान्य बात नहीं ! यह शब्द स्वयं में इस वस्तु-स्थिति की पुष्टि है कि मोह-विषाद तो परिस्थिति का सामयिक प्रभाव अथवा लीला-पुरुषोत्तम भगवान की लीला ही था, अर्जुन की स्वाभाविक स्थिति तो आध्यात्मिक जिज्ञासु की है। अर्जुन की स्थित प्रज्ञ विषयक जिज्ञासा ने असंख्य जिज्ञासु साधकों पर बहुत बड़ा उपकार किया, गीता जी का यह अत्यन्त अलौकिक प्रकरण जिसे अनेक गीता रहस्यकारों ने स्वतन्त्र स्थित-प्रज्ञोपनिषद की संज्ञा दी, इसी जिज्ञासा का ही तो सुफल है !

स्थित प्रज्ञ की पहचान क्या है, वह कैसे बोलता, बैठता, चलता है ... ? अर्जुन के इस प्रश्न के माध्यम से जो दिव्य ज्ञान प्रवाह श्री भगवानुवाच के रूप में मुखर हुआ, वह एक ऐसी शाश्वत-अमर प्रेरणा बन गया जो न केवल स्थित प्रज्ञ महापुरुष का परिचय हमसे करवाता है अपितु उस अवस्था को कैसे प्राप्त किया जा सकता है, उसके लिए प्रेरक पाथेय भी बन गया। आओ, इसी गीता पथ पर कदम बढ़ायें, आप जगें-औरों को जगायें।

जय श्री कृष्ण

जय श्री राधे

सम्पादकीय...

जीव के पंचतत्वीय देह के साथ सम्बन्ध जुड़ना जीवन का प्रारम्भ है और जीव-चेतना का देह से सम्बन्ध विच्छेद ही मृत्यु है! जन्म और मृत्यु के मध्य में एक सुनिश्चित अवधि का नाम जीवन है! यदि थोड़ा ध्यान से सोचें तो यह तथ्य स्पष्ट स्वत: हो जाता है। क्योंकि देह ही जीव अर्थात चेतना को धारण करती है तो निश्चित एवं नि:सन्देह शरीर की स्थिति-परिस्थिति जीव पर अपना प्रभाव डालती ही है, दूसरी और जीव की प्रारब्ध जनित वृत्तियाँ और गुण जीवन की दिशा और दशा को प्रभावित करते ही हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि प्रकृति प्रदत्त शरीर और प्रारब्ध जनित वृत्तियाँ कैसे स्वस्थ और सात्विक हों,

वैसे तो इसका उत्तर यदा-कदा गुरूदेव के गीता सूत्रों में हम सबको मिलता रहा है, परन्तु पुनरावृत्ति के लिए आइए समझें कि देह का पोषण और संरक्षण एक अनवरत (जीवनभर) प्रक्रिया है, जीवन के प्रारम्भिक वर्षों से ही **युक्त आहार**, **युक्त समय** एवं **युक्त मात्रा** में, अनेकानेक दैहिक व्याधियों से दूर रख सकता है, प्रसादवृत्ति से किया भोजन शरीर को पोषित करने के साथ-साथ, भीतरी चेतना को भी सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है। **चेतना** अर्थात **जीव** की वृत्तियाँ प्रारब्ध जन्म होते हुए भी, मानव जीवन का सबसे उत्साहवर्धक पहलू है कि हम अपने वर्तमान कर्मों का निर्धारण विवेक और सद्प्रेरणाओं का संकल्पित अनुसरण करते हुए कर सकते हैं! चेतना (जीव) के स्वस्थ रहने, पोषित रहने के लिए सद्विचार अत्यन्त आवश्यक हैं और सद्भाव और सद्विचारों का सृजन करते हैं- सत्संग, सद्ग्रन्थ और सद्गुरु!

तो आइए- प्रार्थना करें गुरुदेव से कि हम जीवन में समय रहते देह और जीव दोनों के स्वास्थ्य का सन्तुलन बनाए रख सकें और मनुष्य योनि में ही सम्भव दैवी आनन्द का अनुभव कर सकें!

श्री कृष्ण कृपा की छत्रछाया हम सब पर सदा बनी रहे!

जय श्री कृष्ण! जय श्री राधे!

श्रीमद्भगवद्गीता

अथ द्वादशोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

अथैतदप्यशक्तोऽसि कर्तुं मद्योगमाश्रितः।
सर्वकर्मफलत्यागं ततः कुरु यतात्मवान्॥11॥

अथ, एतत्, अपि, अशक्तः, असि, कर्तुम्, मद्योगम्, आश्रितः,
सर्वकर्मफलत्यागम्,ततः, कुरु, यतात्मवान् ॥11॥

कर न सके तूँ अगर इतना भी, तो ले फिर शरण मेरे ही योग की।
वश करके मन-इन्द्रियाँ अपनी अब, फल छोड़कर ही तूँ कर कर्म सब॥

(सर्व कर्मों के फल त्याग से भगवत् प्राप्ति)

और

अथ	–	यदि
मद्योगम्	–	मेरी प्राप्ति रूप योग के
आश्रितः	–	आश्रित होकर
एतत्	–	उपर्युक्त साधन को
कर्तुम	–	करने में
अपि	–	भी (तू)
अशक्तः	–	असमर्थ
असि	–	है
ततः	–	तो
यतात्मवान्	–	मन-बुद्धि आदि पर विजय प्राप्त करने वाला
सर्वकर्मफलत्यागम्-		सब कर्मों के फल का त्याग
कुरु	–	कर

(सर्वकर्म फल त्याग की प्रशंसा)

श्रीभगवानुवाच

श्रेयो हि ज्ञानमभ्यासाज्ज्ञानाच्छ्रेयानं विशिष्यते।
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छान्तिरनन्तरम्॥12॥

श्रेयः, हि, ज्ञानम्, अभ्यासात्, ज्ञानात्, ध्यानम्, विशिष्यते।
ध्यानात्, कर्मफलत्यागः, त्यागात्, शान्तिः, अनन्तरम्।।12।।

अभ्यास से श्रेष्ठ होता है ज्ञान,
मगर श्रेष्ठ इस ज्ञान से भी है ध्यान।
समझ ध्यान से बढ़ के फल त्याग को,
शान्ति बिना देर के इससे हो॥12॥

अभ्यासात्	–	मर्म को न जानकर किये हुए अभ्यास से
ज्ञानम्	–	ज्ञान
श्रेयः	–	श्रेष्ठ है,
ज्ञानात्	–	ज्ञान से
ध्यानम्	–	मुझ परमेश्वर के स्वरूप का ध्यान
विशिष्यते	–	श्रेष्ठ है, (और)
ध्यानात्	–	ध्यान से (भी)
कर्मफलत्यामः	–	सब कर्मों के फल का त्याग (श्रेष्ठ है);
हि	–	क्योंकि
त्यागात्	–	त्याग से
अनन्तरम्	–	तत्काल ही
शान्तिः	–	परम शान्ति होती है।

क्रमशः

'गीता ज्ञान संस्थानम्' - गीता जी की अवतरण स्थली धर्मक्षेत्र-कुरुक्षेत्र में गीता जी की प्रेरणाओं को जन जन तक पहुँचाने हेतु निर्मित होने वाला अनूठा गौरवशाली केन्द्र! आओ जुड़ें जीओ गीता से, गीता ज्ञान संस्थानम् से!

स्वामी रामतीर्थ दिग्दर्शन

श्यामलाल कश्यप

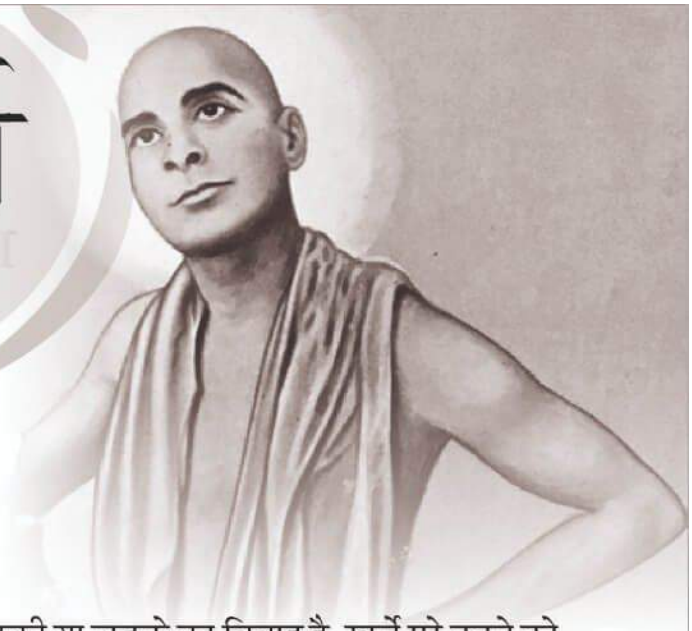

गतांक से आगे...

सुलह की जंग-गंगा तरंग

1. समस्त संसार के सिद्धान्तों को यथार्थ जानने वाली सभ्यता, रूप के गुण के सिद्धान्त तो एक तरफ वर्ण विकास - लौंगरिथा (Longarithan - घातागणन) और क्वाटर-नियस (Quarter-Nious - चतुष्टयं) की तह तक पहुँचा हुआ और प्रकृति का पति है, यह व्यक्ति जो जानता है, सर्वत्र यही आत्मा (अपने आप) प्रकाशमान है।

2. सूर्य के प्रकाश स्पेक्ट्रम (Spectrum) सप्तरंजन व रश्मि वर्ण में काली लकीरें (Dark Lines) हुआ करती हैं, किन्तु सूर्य ग्रहण के अवसर पर स्पेक्ट्रम को देखें तो ये लकीरें श्वेत दृष्टिगोचर होंगी। ठीक उसी तरह प्यारे पाठक! ये रेलें, तोपें और फैलूनें जो अविद्यारूपी ग्रहण के समय सफेद तारे प्रकाशमान मालूम देती हैं, ग्रहण हटने पर देखी जायें तो काली धारियाँ बन जायेंगी।

3. क्लाडियस, कैलीगुला, टाई बेरियस, डामोशियन, वार्ठटोलियन, नीरो।

पाठको! यदि उपरलिखित सम्राटों का प्रभुत्व इस शर्त पर प्राप्त होता हो कि उन लोगों - जैसी प्रकृति और स्वभाव भी अवश्य लेना पड़े तो थूक दो साम्राज्य पर, धूल डालो उस शहन्शाह पर।

4. प्रत्येक मनुष्य वास्तव में ईश्वर है, पर मूर्खता करता है।

5. दफ्तरों में पिसनहारी की तरह चक्की रगड़ते आये। घर में वही दफ्तर का काम मौजूद है। सत्संग की फुर्सत कहाँ? ड्यूटी, फर्ज! लड़की या लड़के का विवाह है, खर्चे पूरे करने को घर गिरवीं रखने की चिन्ता रात-दिन घेरे है।

ऐ चाटुकारिता (खुशामद) बंवकता (फरेब) धोखा और घूंस! तुम्हीं मूझे अपनी शरण में लेलो और निर्धनता की अपमानता (Disperity) से बचाओ। ड्यूटी, धन और मान की अभिलाषा की चोटें सहता रात-दिन गेंद की तरह लड़खड़ाता चला जाता है और इनका नाम ड्यूटी (कर्तव्य) रखा हुआ है।

6. पानी की खोज ही पानी से वंचित रखती है।

7. प्यारे, जरा जाग तो सही! अपनी महिमा (Glory) रूपी घोड़े बेचकर अविधा रूपी वेश्या से आलिंगन कर कब तक तू सोया रहेगा? श्रुति भगवती तेरे सिरहाने बैठे तुझे मोह निद्रा से जगाने के लिये ऊँचे स्वरों में तेरी महिमा के गीत गा रही है। पर हाय! तेरे कान पर जूँ तक नहीं रेंगती ।

तारे झमक-झमक के बुलाते हैं राम को,
आँखों में उनकी रहता हूँ, जाऊँ किधर को मैं।
यादे हक़ दिन रात रख,
जंजाल दुनियाँ छोड़ दे।
कुछ न कुछ तो लुत्फे खालिक,
तुझ में होना चाहिये॥

क्रमशः

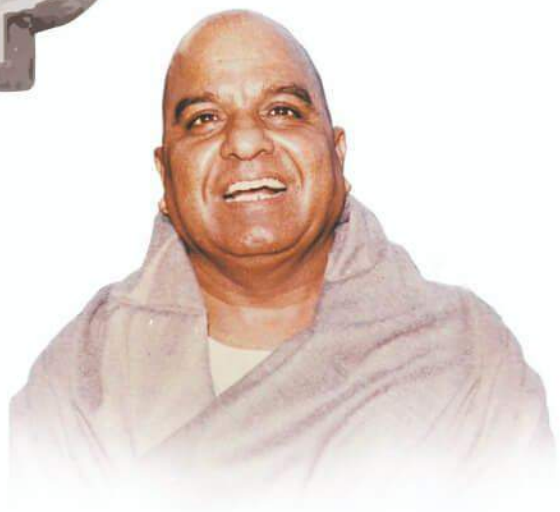

गीता चिन्तन

विचारवान् को शोक कैसा

-ब्रह्मलीन पूज्य गुरुदेव
स्वामी गीतानन्द जी महाराज (वीर जी)

गतांक से आगे...

जैसे-

(1) स्वर्ण के कार्य आभूषण स्वर्ण से पृथक नहीं हो सकते।

(2) बुद्‌बुदे, भँवरे एवं तरंगें जल के कार्य होने से जल से अभिन्न हैं।

(3) मृत्तिका के नाना प्रकार के पात्र मृत्तिका से किसी भी रूप में अलग नहीं हो सकते।

(4) सूत के बने हुए नाना प्रकार के वस्त्रों को सूत से भला कौन पृथक कर सकेगा।

इसी प्रकार

यह प्रकृति भगवान् से सदा अभिन्न है। इस संसार के प्रपंच में ग्रस्त साधारण मानव भगवान् से इस रहस्य को न समझते हुए नाम-रूपों को ही सब कुछ जानकर दिन-रात उन्हीं में गलतान रहते हैं, परन्तु तत्त्वदर्शी किंवा आत्मानुभवी इस रहस्य को न केवल बौद्धिक रूप से जाना जाता है अपितु उसे अपरोक्षानुभूति द्वारा निजी अनुभव भी हो जाता है कि परमात्मा अनेक रूपों में भास रहे हैं।

अतः

वह सदा सर्वदा अनेकत्व में एकत्व, भिन्नता में एकता तथा बहु में एक की झाँकी लेता हुआ गद्‌गद होता रहता है। हमारे जगद्‌गुरू भगवान् श्री कृष्ण जी श्री गीता जी के दूसरे अध्याय के 16 वें श्लोक में उसे तत्त्वदर्शी के नाम से पुकार रहे हैं। प्रिय गीता-पाठक ! अब हमें यह विचार करना होगा कि -

तत्त्व क्या है?

इस अद्‌भुत प्रकृति में जितने भी प्राणी पदार्थ हमारे भगवान्‌जी ने रचे हैं ये दो वस्तुओं के मिलाप से बने हैं। यथा-

(क) जड़ (Matter)

(ख) चेतन (Energy)

आज का वैज्ञानिक (Scientist) भी यही पुकार कर रहा है। यथा-

"Every object in the world has two types of properties; (a) The essential and (b) The non-essential. A substance can remain even when its ' non essential' qualities are absent, but is cannot remain without its 'essential' property. For example; The colour of the flame the length and width of tongues of flame, are all the 'non-essential' properties of fire, but the essential property of it is heat."

अर्थात्

प्रकृति की हर वस्तु के दो गुण हुआ करते हैं-

(क) आवश्यक

(ख) अनावश्यक

क्रमशः

श्री गीता जी की श्लोकशः सरल प्रासंगिक व्याख्या

गतांक से आगे-

तेरहवाँ अध्याय (क्षेत्रक्षेत्रज्ञ विभाग योग)

गीता प्रेरणा

—गीता मनीषी स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी महाराज

श्रीभगवानुवाच

इदं शरीरं कौन्तेय क्षेत्रामित्यभिधीयते।
एतद्यो वेत्ति तं प्राहुः क्षेत्रज्ञ इति तद्विदः।।

-13/1

श्री भगवान् बोले - हे कुन्तीपुत्र अर्जुन! यह शरीर 'क्षेत्र' इस रूप से कहा जाता है और जो इसको जानता है, उसको 'क्षेत्रज्ञ' इस नाम से उसके तत्त्व को जानने वाले ज्ञानीजन कहते हैं।

अध्याय का नाम क्षेत्र-क्षेत्रज्ञ विभाग योग है। इन्हीं शब्दों को लेकर गीता के कृष्ण अध्याय का प्रारम्भ कर रहे हैं। क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ गीता प्रेरणाओं में प्रयोग किए अद्‌भुत लेकिन बहुत समीचीन-सार्थक शब्द! पूरा अध्याय इन्हीं दो शब्दों के इर्द-गिर्द घूमता हुआ निर्गुण-निराकार साधना के कई जटिल, गूढ़ रहस्यों को प्रकट करता हुआ दिखाई देगा।

देहाभिमानियों के द्वारा उस अव्यक्त विषयक निर्गुण निराकार तत्त्व को जानना कठिन है- ऐसा बारहवें अध्याय में भगवान् ने स्पष्ट कह चुके हैं। देहाभिमानी ही निर्गुण निराकार उपासना में सबसे बड़ी बाधा है। अध्याय का प्रारम्भ **इदं शरीरम्** से करके गीता- उपदेष्टा ने सर्वप्रथम इसी बाधा को दूर करने का संकेत किया है-

भगवान् बोले सुन ऐ अर्जुन वीर,
कहा जाता है क्षेत्र ही यह शरीर।
है जो जानने वाला अर्जुन इसे,
क्षेत्रज्ञ कहते हैं ज्ञानी उसे।।

संसार के प्राणी पदार्थ, रिश्ते-नाते जो अपने से पृथक हैं, उन्हें '**इदम्**' के रूप में प्राय: सम्बोधित किया जाता है। 'यह' वस्तु ऐसी है, 'यह' पदार्थ वैसा है, 'यह' मेरा पिता है, 'यह' मेरी माता, भाई, बहन, पति, पत्नी या अमुक रिश्तेदार हैं। यह शब्द हम इस रूप में तो प्रयोग करते हैं; लेकिन शरीर को 'मैं' या 'मेरा' मान लेते हैं। यही देहाध्यास है, यही शरीर को लेकर अंह एवं आगे ममता का सम्बन्ध है, यही बाधा है, यहीं से बन्धन का प्रारम्भ है, यहीं से ही आगे मोह तथा अन्याय वृत्तियों का विस्तार है।

शरीर '**इदम्**' है.... '**अहं**' नहीं। शरीर 'यह' है 'मैं' नहीं। शरीर को 'मैं' मानना भूल है, भारी भूल! 'अहंम' तो आत्मा के साथ है। **अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशय स्थित:** (10/20)! शरीर 'क्षेत्र' है, 'कर्म' का क्षेत्र; कर्म की भूमि! खेत में जैसा बीज डाला जाता है, वैसी ही फसल काटने को मिलती है। जैसी कामनाओं का बीजारोपण कर शरीर द्वारा कर्म किया जाता है, वैसे ही फल की फसल सामने होती है।

शरीर दृश्य है, जीवात्मा दृष्टा। शरीर क्षेत्र है और आत्मा क्षेत्रज्ञ । शरीर को यह करके मानो, इसी रूप में देखो। केवल मौखिक-वाचिक नहीं, केवल पाठक बनकर पढ़ने के रूप में नहीं। ध्यान में बैठो! इस भाव को समझो। शरीर को अपने से पृथक अनुभव करो, केवल साक्षी दृष्टा बनकर शरीर को देखो, स्वयं का सम्बन्ध उससे करो। बात अनुभव में आ जायेगी, प्रत्यक्ष हो जायेगी। यह क्षेत्र-शरीर और इसको जानने वाला क्षेत्रज्ञ, जीवात्मा, वह चेतन तत्त्व। इसलिए भगवान् **तद्विद:** शब्द का विशेष रूप से प्रयोग कर रहे हैं। जिन्होंने इस तथ्य को तत्त्व से जाना, समझा और अनुभव किया है, उन्होंने ऐसा कहा है।

गीता-उपदेष्टा की व्यावहारिक उपदेश-कुशलता। स्वयं द्वारा कहा जाना क्या पर्याप्त नहीं था? लेकिन साधक की सीधी प्रेरणा हेतु यह दिव्य संकेत। जिन्होंने ऐसा तात्त्विक अनुभव किया है, उन्होंने कहा; अर्थात् यह बात केवल कहने की नहीं; अनुभव की है, अनेकों ने किया है, तू भी कर सकता है।

क्रमश:

जया एकादशी

यह व्रत माघ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी को किया जाता है। इस तिथि को भगवान् कृष्ण की पुष्प, जल, अक्षत, रोली तथा विशिष्ट सुगन्धित पदार्थों से पूजन करके आरती उतारनी चाहिए। भगवान् को भोग लगाये गये प्रसाद को भक्त स्वयं खायें।

जया एकादशी व्रत कथा:- एक समय इन्द्र की सभा में माल्यवान नामक गन्धर्व गीत गा रहा था परन्तु उसका मन अपनी नवयौवना सुन्दरी में आसक्त था। अतएव स्वर लय भंग हो रहा था। यह लीला इन्द्र को बहुत बुरी तरह खटकी, तब उन्होंने क्रोधित होकर कहा- हे दुष्ट गन्धर्व! तू जिसकी याद में मस्त है वह हिमालय पर पिशाच बनकर दु:खपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगे। दैवयोग से एक दिन माघ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी के दिन उन्होंने कुछ नहीं खाया। वह दिन फल-फूल खाकर उन्होंने व्यतीत किया। दूसरे दिन सुबह होते ही व्रत के प्रभाव से उनकी पिशाच देह छूट गई और अति सुन्दर देह धारण कर स्वर्गलोक को चले गये।

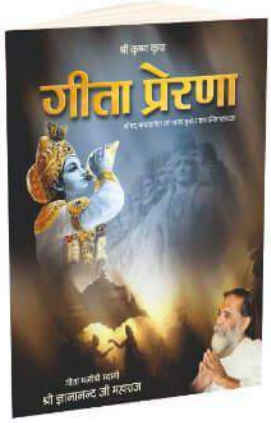

एक पूर्ण पुस्तक है श्रीमद्भगवद्गीता

-माननीया राष्ट्रपति

(अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव कुरुक्षेत्र में शुभारम्भ में दिया उद्बोधन)

मानवता की मुस्कान है गीता

अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के अवसर पर कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय कुरूक्षेत्र के तत्वाधान में ''श्रीमद्भगवद्गीता के परिप्रेक्ष्य में विश्व शान्ति एवं सद्भाव'' विषय पर त्रि-दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी का उद्घाटन गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज एवं स्वामी गोविन्द गिरी जी महाराज की पावन व गरिमामयी उपस्थिति में भारत की राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू के कर कमलों द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र में सन्तों एवं शीर्ष नेतृत्व के द्वारा श्रीमद्भगवद्गीता पर सारगर्भित उद्बोधन प्रस्तुत किए गए।

जीओ गीता के प्रणेता गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज ने श्रीमद्भगवद्गीता के अलौकिक स्वरूप का वर्णन करते हुए कहा कि वर्तमान परिस्थितियों में इस महान ग्रन्थ का एक-एक सूत्र उपयोगी है। इस अतुल्य अमृत का दिव्य उद्घोष कुरूक्षेत्र की पावन धर्म धरा पर 5169 ईसा पूर्व मानव कल्याण के उद्देश्य से स्वयं भगवान् श्री कृष्ण के मुखारविन्द से हुआ था। श्रीमद्भगवद्गीता की प्राकट्य स्थली में आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव विश्व में अपनी एक अलग पहचान बना रहा है। महाभारत में जब चारों ओर द्वन्द्व, संघर्ष एवं युद्ध का वातावरण था तब भगवान् श्रीकृष्ण 18 दिनों तक अर्जुन के रथ के सारथी बने रहे। मानवीय लीला को रचने के लिए दोनों सेनाओं के मध्य श्री कृष्ण अर्जुन रथ स्थापित हुआ। अपने बन्धुओं को देखकर अर्जुन का मोह जागृत हुआ जिससे शोक एवं विषाद का जन्म हुआ। तब भगवान् श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता रूपी दुग्धापान करवाया। आज के सन्दर्भ में विश्व में युद्ध की विभीषिकाएं, अशान्ति व अस्थिरता का भाव महाभारत की परिस्थितियों के रूप में उभर रहा है। इन सभी समस्याओं का निवारण मात्र एक ही ग्रन्थ श्रीमद्भगवद्गीता में निहित है। उन्होंने जीओ गीता के वैश्विक सन्देश ''मानवता की मुस्कान है गीता, समस्याओं का समाधान है गीता'' पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महात्मा गाँधी स्वयं समस्याओं के समाधान के लिए इस महान ग्रन्थ का अध्ययन किया करते थे। नेल्सन मंडेला ने स्वयं स्वीकारा है कि उनके 25 वर्ष के कारावास के दौरान श्रीमद्भगवद्गीता उनका सच्चा साथी था। स्वतन्त्रता संग्राम में इस महान ग्रन्थ ने असंख्य सैनानियों का मनोबल बढ़ाया। श्रीमद्भगवद्गीता पूरी मानवता के लिए गौरव ग्रन्थ

है। मन के तनाव, दबाव व अवसाद को दूर करने का मात्र सूत्र यह दिव्य एवं अतुल्य ग्रन्थ है। विश्व सद्भावना के विकास के लिए सम्पूर्ण कुँजी है श्रीमद्भगवद्गीता।

स्वामी गोविन्द गिरि जी महाराज ने अपने वक्तव्य में श्रीमद्भगवद्गीता अमृत की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कहा कि गीता महाभारत का सार है। इस अतुलनीय ग्रन्थ में न केवल पूर्ण राष्ट्र को अपितु पूर्ण विश्व को एक रस बनाने की क्षमता है। उन्होंने कहा कि जहाँ योगेश्वर श्री कृष्ण व धनुर्धर अर्जुन है, वहाँ विजय है। आज के सन्दर्भ में योगेश्वर श्री कृष्ण सकारात्मक बुद्धि का प्रतीक है एवं धनुर्धर अर्जुन स्वस्थ शरीर का प्रतीक है। अर्थात् स्वस्थ शरीर एवं सकारात्मक बुद्धि का योग सफलता का मार्ग प्रशस्त करता है। श्रीमद्भगवद्गीता विजय ग्रन्थ है। यह अद्भुत ग्रन्थ योग व वेदान्त का जोड़ है।

भारत देश की माननीय राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू ने श्रीमद्भगवद्गीता पर अपने सारगर्भित उद्बोधन में विचार प्रकट करते हुए कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता भारत का अद्भुत, अलौकिक एवं लोकप्रिय ग्रन्थ है जो ''योग कर्मसु कौशलम्'' सूत्र पर आधारित है। श्रीमद्भगवद्गीता योग शास्त्र है जो जीवन प्रेरणा रूप में मानव कल्याण की राह प्रशस्त कर रहा है। यह कायरता को छोड़ने और वीरता को अपनाकर कर्मक्षेत्र में अग्रसर होने का सन्देश देता है। सभी उपनिषद् गौमाता समान हैं जिनको अपनाने वाले स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण हैं। गीता रूपी दुग्ध पीने वाले स्वयं अर्जुन हैं। इस महान ग्रन्थ में सभी वेदों का सार समाहित है। आज के भौतिक एवं व्यवहारिक जीवन की समस्याओं का समाधान सूत्र एक मात्र गीता ही है। श्रीमद्भगवद्गीता एक पूर्ण पुस्तक है। जिस व्यक्ति ने इस ग्रन्थ को समझ लिया उसे अन्य किसी शास्त्र के विस्तार में जानने की आवश्यकता नहीं है। यह महान ग्रन्थ आलस्य व अकर्मण्यता को त्यागकर निस्वार्थ भाव से कर्म करने की प्रेरणा देता है। व्यक्ति को स्थितप्रज्ञ अर्थात सभी परिस्थितियों में सन्तुलन बनाए रखने वाला होना चाहिए। श्रीमद्भगवद्गीता निराशा में आशा जागृत करने वाला ग्रन्थ है।

हरियाणा के राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय ने अपने उद्बोधन में कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता अतुल्य ग्रन्थ है। यह जीवन के मार्गदर्शक के रूप में कर्त्तव्य व अकर्त्तव्य की असमंजस स्थिति से बाहर निकाल कर द्वन्द्वों व चुनौतियों का सामना करने का सन्देश देता है। यह किसी मजहब विशेष का ग्रन्थ नहीं है और न ही केवल मानव मात्र का ग्रन्थ है अपितु सभी प्राण धारको के लिए अनमोल अमृत है। यह सभी प्राणीयों से प्रेम व करूणा का सन्देश प्रेषित करता है। श्रीमद्भगवद्गीता विश्व शान्ति का सूत्र है। सभी राष्ट्रों की संस्कृति दर्शन पर आधारित है। सम्पूर्ण विश्व में सभी दर्शनों पर गीता के प्रभाव को स्वीकार किया है। भारत की इस अतुल्य धरोहर का 75 से अधिक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है। आज विश्व के सभी शीर्ष विश्व विद्यालयों में श्रीमद्भगवद्गीता पर मन्थन चल रहा है। सभी समस्याओं की उम्मीद की किरण एक मात्र इस ग्रन्थ में समाहित है।

हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर जी ने कहा कि कुरूक्षेत्र कर्मयोग की भूमि है। इस धरा पर भगवान् श्रीकृष्ण ने श्रीमद्भगवद्गीता रूपी अमृत से अर्जुन को निमित्त बनाकर सम्पूर्ण मानव जाति के लिए कर्मयोग का सन्देश दिया। यह दिव्य ग्रन्थ नई पीढ़ियों में जीवन मूल्यों को संजोए रखने की क्षमता रखता है।

हरियाणा के शिक्षा एवं कला मंत्री श्री कंवर पाल गुज्जर जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता आधुनिक व्यक्ति को वास्तविक रूप से मार्गदर्शन प्रदान करती है। इस ग्रन्थ में जीवन संहिता एवं मनुष्य धर्म से जुड़े उपदेश निहित हैं। मानव मात्र का कल्याण इस ग्रन्थ के माध्यम से ही सम्भव है। इसका अध्ययन अज्ञान से मुक्त करता है।

इस अवसर पर नेपाल के राजदूत डॉ शंकर प्रसाद शर्मा सहित कई अन्य देशों के प्रतिनिधि, केन्द्र एवं राज्य सरकार के प्रतिनिधि मुख्य रूप से उपस्थित रहे।

साभार
सुमित गोयल

-उपेन्द्र सिंघल, कुरुक्षेत्र

महापुराण महाभारत के 18 पर्वों में उल्लेखित 18 दिन चले महाभारत युद्ध के पहले दिन श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को सुनाई 18 अध्यायी श्रीमद्भगवद् गीता के वार्षिक उद्भव दिवस के अवसर पर आयोजित 18 दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के सुसज्जित 18 रंगारंग कार्यकर्मों का गत वर्ष 2022 का विवरण इस प्रकार है।

वैसे तो देश विदेश में अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव सारे साल कहीं ना कहीं आयोजन हो रहा होता है, लेकिन गीता उद्भव स्थली कुरुक्षेत्र में इसके प्राकट्य दिवस यानी मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी के अवसर पर गीता महोत्सव के आयोजन की सार्थकता और दिव्यता विशेष है। इस बार का महोत्सव और विशेष हो गया जब इसके मुख्य आयोजन के उद्घाटन के लिए भारत की राष्ट्रपति द्रोपदी मुर्मू का आगमन हुआ।

गुरुदेव स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज के आर्शीवाद और हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर जी के मार्गदर्शन में गीता जयन्ती अवसर पर 2016 से लगातार कुरुक्षेत्र में आयोजित हो रहा है, इस अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का मूल उद्देश्य जन समाज में गीता मूल्यों का आरोपण और गीता प्रेरित जीवन शैली का सृजन रहा है और इसी भावना से महोत्सव के सभी कार्यक्रमों की योजना एवं क्रियान्वयन होता है।

1. अन्तर्राष्ट्रीय गीता सेमिनार :- गीता सेमिनार का उद्घाटन सत्र भारत की राष्ट्रपति श्रीमती द्रोपदी मुर्मू की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। 'श्रीमद्भगवद्गीता के परिपेक्ष में विश्व शान्ति एवं सद्भाव'' विषय पर हरियाणा के मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल खट्टर जी, राज्यपाल श्री बंडारू दत्तात्रेय, महोत्सव के पार्टनर देश नेपाल के राजदूत, सन्त गोविन्द गिरि जी और पूज्य गुरुदेव स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज सहित अन्य विशिष्ट अतिथियों ने अपने वक्तव्य दिए।

2. ऑनलाइन गीता माला प्रश्नोत्तरी :- हरियाणा दिवस 1 नवम्बर से ही महाभारत और गीता विषय पर ऑनलाइन प्रश्नोत्तरी 18 दिन तक चलायी गई। देश के 18 राज्यों और विभिन्न देशों के लगभग 50000 गीता अनुरागियों ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। इसके इलावा श्लोक उच्चारण, चित्रकला और फैंसीड्रैस की भी ऑनलाइन प्रतियोगिताएँ आयोजित की गयी।

3. गीता मैराथन :- कुरुक्षेत्र के स्पोर्ट्स विभाग द्वारा मैराथन का आयोजन किया जिसमें प्रदेश भर से आए हजारों युवक और युवतियों ने भाग लिया। ब्रह्मा जी के आदि तीर्थ ब्रह्मसरोवर से प्रारम्भ करके वहीं प्रतियोगिता का समापन विजेताओं को पुरस्कृत करके किया गया।

4. सन्त सम्मेलन :- लगातार 6 वर्षों से गुरूदेव की अध्यक्षता में आयोजित इस सन्त सम्मेलन में ब्रह्मसरोवर के ऐतिहासिक पुरुषोत्तमपुरा बाग में प्रमुख सन्तों का शुभ आगमन हुआ। हरियाणा और पंजाब दोनों राज्यों के माननीय राज्यपालों की गरिमामय उपस्थिति में पूज्य संत गणों के प्रवचन का अमृतपान हजारों उपस्थित श्रद्धालुओं ने किया।

5. 48 कोस तीर्थ सम्मेलन :- जिससे वर्तमान के 5 जिलों (कुरुक्षेत्र, करनाल, पानीपत, जींद और कैथल) में फैली 48 कोस पौराणिक कुरुक्षेत्र भूमि में 367 से ज्यादा पौराणिक तीर्थ हैं जिसमें से 164 तीर्थ कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड में शामिल हैं। इन तीर्थों का जीर्णोद्धार और सम्बन्धित मेलों का आयोजन कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड के

तत्वाधान में किया जाता है। इन तीर्थों के प्रतिनिधियों के समक्ष बोर्ड के वाइस चेयरमैन और हरियाणा के मुख्यमंत्री ने 'तीर्थ मित्र' पोर्टल का शुभारम्भ किया। जन समाज से तीर्थों में श्रद्धा रखने वाला कोई भी व्यक्ति इस पोर्टल के माध्यम से के.डी.बी. में खुद को रजिस्टर करवा सकेगा और अमुक तीर्थ का तीर्थ मित्र बन जायेगा।

6. सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं लोक नृत्य :- पावन ब्रह्मसरोवर के परिक्रमा मार्ग स्थित घाटों पर, पुरुषोत्तमपुरा बाग स्थित मंच पर और मेला क्षेत्र स्थित सांस्कृतिक पण्डाल में देश विदेश की अनूठी लोक नृत्य नाटिकाओं और कलाओं का प्रदर्शन हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी आकर्षण का केन्द्र बना रहा। 48 कोस कुरुक्षेत्र के चुने हुए 75 तीर्थों पर भी सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन सम्पन्न हुआ।

7. महाभारत व्यूह रचना गैलरी :- 18 दिन तक चले महाभारत युद्ध में दोनों तरफ की सेनाओं ने लगभग 17 व्यूह रचनाओं का प्रयोग किया। रिटायर्ड जनरल जी.डी. बक्शी के अनुसार भारतीय सेना में भी इनसे प्रेरणा लेकर कुछ व्यूह रचनाएं शामिल की गयी हैं। हर एक दिन मुख्य युद्ध में आमने-सामने की सेनाओं द्वारा प्रयोग हुई व्यूह रचनाओं और उनके फल स्वरूप युद्ध परिणाम टेराकोटा म्यूरल्स के माध्यम से वर्णन इस गैलरी में दर्शाया हुआ है। सम्भवत: रचनात्मक युद्ध कलाओं का इतना विस्तृत वर्णन कुरुक्षेत्र के महाभारत युद्ध से पहले कभी नहीं मिलता। ब्रह्मसरोवर के उत्तरी पश्चिमी तट पर तैयार की गयी इस दीर्घा का अनावरण मुख्यमंत्री जी ने किया।

8. गीता पाषाण प्रसंग उद्यान :- विशेष काला भैंसलाना पत्थरों से तैयार गीता और महाभारत के प्रसंगों पर आधारित मूर्तियों का यह अनूठा उद्यान पुरुषोत्तमपुरा बाग के पश्चिमी छोर पर तैयार हुआ और माननीय राष्ट्रपति महोदया द्वारा उद्घाटन हुआ। हर 21 मूर्तियों के सम्बन्धित सोच, उल्लेख और कलाकारों का वर्णन आंगतुक क्यूआर स्कैन करके मोबाईल पर पढ़े।

9. गीता बुक फेयर :- हरियाणा ग्रन्थ अकादमी द्वारा आयोजित इस गीता पुस्तक मेले में लगभग 40 प्रकाशक और धार्मिक संस्थानों ने पुस्तकों की प्रदर्शनी लगायी। वहीं एक मंच सेटअप किया गया था जहाँ नयी पुस्तकों का विमोचन और परिचर्चाओं का भी आयोजन हुआ।

10. रंगोली एवं साँझी प्रतियोगिताएं :- हरियाणा की पारम्परिक सांस्कृतिक धरोहर साँझी माई पर आधारित प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया। अनेक कलाकारों और विद्यार्थियों ने साँझियाँ बनायीं। इसके साथ ही रंगोली बनाने की प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया।

11. विभिन्न संस्थाओं द्वारा प्रदर्शनियाँ :- इस बार लगभग 80 से ज्यादा सामाजिक और धार्मिक संस्थाओं ने महोत्सव में किसी न किसी तरह भाग लिया। किसी संस्था की प्रदर्शनी लगी, किसी के भण्डारे हुए, किसी ने कथा करवाई, कोई शैक्षिक गतिविधियों में व्यस्त हुए, कुछ तीर्थ परिक्रमाओं और गीता शोभायात्रा में सम्मिलित हुए, कुछ दीप उत्सव में शामिल हुए। महत्वपूर्ण बात यह है कि कुरुक्षेत्र में आयोजित इस गीता कुम्भ में साल दर साल देश भर की धार्मिक संस्थाओं की संख्या बढ़ती जा रही है।

12. सन्त मोरारी बापू द्वारा मानस गीता कथा :- ब्रह्मसरोवर के पूर्व मेलाक्षेत्र में महोत्सव का आगाज इस साल सन्त मोरारी बापू द्वारा मानस गीता रामकथा से हुआ। 10 हजार से ज्यादा श्रद्धालु 9 दिन तक कथा का श्रवण करते रहे। इनमें से 3000 से ज्यादा जन तो दूसरे शहरों, प्रदेशों और देशों से आकर रहे थे। गीता ज्ञान संस्थानम् के तत्वाधान में लगभग 15000 से ज्यादा व्यक्तियों का 3 समय भोजन प्रसाद बनता रहा। इतना व्यापक और सुसंगठित आयोजन सम्भवत: कुरुक्षेत्र में पहली बार हुआ। गुरुदेव स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज के आर्शीवाद से कुरुक्षेत्र 9 दिनों तक सन्त मोरारी बापू के दिव्य कथा प्रसाद से अलौकिक रहा।

13. शिल्प मेला :- वर्तमान में औद्योगिक प्रगति और विकास के चलते हस्तकला उद्योग एवं कलाएं गौण होती जा रही है। सरकारों के सम्बन्धित विभाग निरन्तर इन विधाओं के लिए मार्केट प्लेस तैयार करके और इनका प्रचार करके इनको जीवन्त रखने का प्रयास करते रहते हैं। महोत्सव के दौरान ब्रह्मसरोवर परिसर स्थित सदरियों में शिल्प मेले का आयोजन इसी श्रृंखला में एक कड़ी है। 18 दिन तक चलने वाले इस मेले की सार्थकता इसमें होने वाली खरीददारी से ही लग जाता है।

14. हरियाणा संस्कृति का पवेलियन :- महोत्सव का एक मुख्य आकर्षण हरियाण प्रदेश का सांस्कृतिक दर्शन रहता है जो इस पवेलियन के माध्यम से एक पारम्परिक गाँव का स्वरुप तैयार करके अनुभव

करवाया जाता है। लोक कलाएं, प्रादेशिक व्यंजन, घास के छप्परों से बनी हुई झोंपड़ियों में पौराणिक औजार और वस्त्रों की प्रदर्शनी तथा पगड़ी आदि पोशाकों के स्टॉल से सुशोभित इस पवेलियन को लाखों लोग देखने आए।

15. पार्टनर देश नेपाल एवं पार्टनर प्रदेश मध्य प्रदेश :- महोत्सव की एक परम्परा भागीदार देश और एक भागीदार प्रदेश का आयोजन में सम्मिलित करना होता है। इस बार नेपाल भागीदार देश और मध्य प्रदेश भागीदार प्रदेश की भूमिका में रहा। सांस्कृति कार्यक्रमों, प्रदर्शनियों और विभिन्न कार्यक्रमों में इनकी सार्थक भागीदारी रही।

16. विराट स्वरूप मल्टीमीडिया शो :- ज्योतिसर में 40 फिट ऊँची श्रीकृष्ण की विराट स्वरूप की प्रतिमा का पिछले दिनों लोकार्पण हुआ था। इस प्रतिमा पर गीता महोत्सव के अवसर महाभारत और गीता आधारित प्रोजेक्शन मैपिंग माध्यम से मल्टीमीडिया शो का विधिवत शुभारम्भ मुख्यमंत्री जी द्वारा किया गया।

17. वैश्विक गीता पाठ :- यह विशेष आयोजन गीता के चुने हुए श्लोकों का 18000 विद्यार्थियों द्वारा कुरुक्षेत्र के मध्य स्थित थीम पार्क में गायन के साथ सम्पन्न होता है। ठीक मध्यान 12 बजे सभी उपस्थित विद्यार्थी और ऑनलाइन माध्यम से जुड़े लगभग और एक लाख विद्यार्थियों के साथ मिलकर अष्टादश श्लोकों का गान करके वातावरण को अलौकिक बना देते हैं। इसी समय देश-विदेश की विभिन्न संस्थाओं की भी आह्वान् किया जाता है वैश्विक गीता पाठ करने का। इस साल भी 200 से ज्यादा स्कूलों में श्लोक उच्चारण का अभ्यास 2 महीने से भी पहले शुरू हो गया था। इस आयोजन के अभ्यास के दौरान विद्यार्थी न केवल श्लोक आत्मसात् कर लेते हैं अपितु अपना विद्यार्थी जीवन भी इनसे प्रेरणा लेकर सार्थक बना लेते हैं।

18. गीता यज्ञ, गीता आरती एवं दीप उत्सव:- सभी 18 दिन ब्रह्मसरोवर तट पर संध्या भजन एवं आरती का भव्य आयोजन हुआ। गीता जयन्ती वाले दिन सभी मुख्य तीर्थों पर दीप जलाये गए और मुख्यमंत्री जी और गुरुदेव द्वारा ब्रह्मसरोवर तट पर दीप दान किया गया।

ज्योतिसर, सन्निहित और ब्रह्मसरोवर पर गीता यज्ञ एवं पाठ किये गए।

विजया एकादशी

विजया एकादशी अति प्राचीन, पवित्र और पापनाशक है। यह निश्चय ही विजय दिलाने वाली है।

पूर्वकाल में जब रावण ने भगवती सीता का हरण कर लिया तब भगवान् राम ने वानर सेना लेकर लंका पर आक्रमण करना चाहा परन्तु महासागर की उत्ताल तरंगों को देखकर कहने लगे- लक्ष्मण इस अगाध समुद्र को किस पुण्य से पार किया जा सकता है? तब लक्ष्मण ने कहा निकट द्वीप में एक प्राचीन मुनि से समुद्र पार करने का उपाय पूछना श्रेयष्कर रहेगा। मुनि ने कहा - आप पुराण पुरूषोत्तम हैं, सर्वज्ञ हैं फिर भी पूछते हैं तो मैं बताता हूँ।

फाल्गुन मास की विजया नाम की एकादशी का व्रत करने से आपकी विजय होगी। यह सुनकर भगवान् राम ने मुनि द्वारा निर्दिष्ट विधि से एकादशी का व्रत किया और प्रभाव से रावण को मारा, लंका पर विजय पायी तथा सीताजी को पाया। इस व्रत को पढ़ने-सुनने से वाजपेय यज्ञ का फल मिलता है।

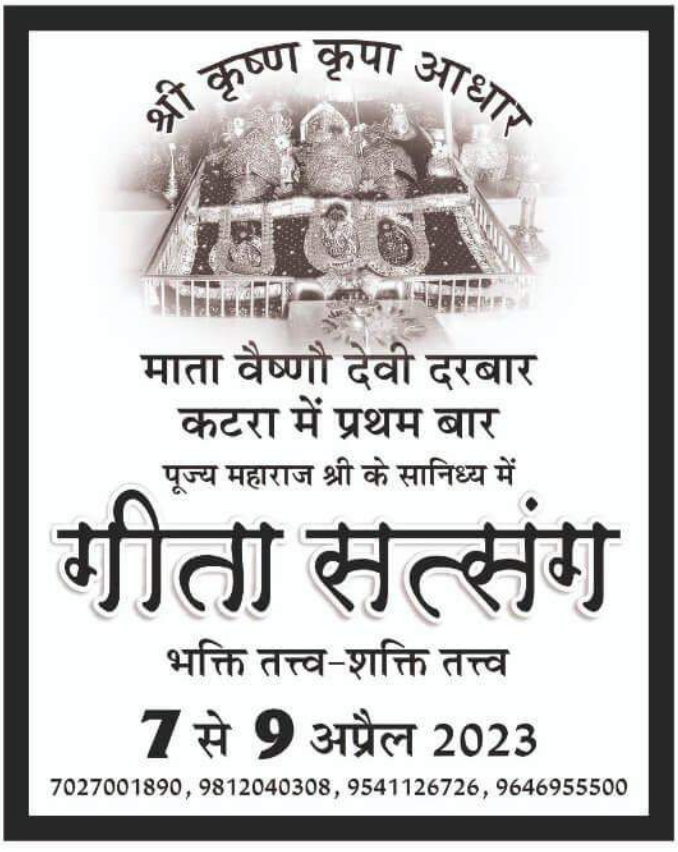

परिवेश ही शिव हैं

-श्री श्री रविशंकर जी

शिव वहाँ होते हैं, जहाँ मन का विलय होता है। ईश्वर को पाने के लिए लम्बी तीर्थ यात्रा पर जाने की आवश्यकता नहीं। हम जहाँ पर हैं, वहाँ अगर ईश्वर नहीं मिलता तो अन्य किसी भी स्थान पर उसे पाना असम्भव है। जिस क्षण हम स्वयं से स्थित, केन्द्रित हो जाते हैं, तो पाते हैं कि ईश्वर सर्वत्र विद्यमान है। शोषितों में, वंचितों में, पेड़-पौधे, जानवरों में सभी जगह। इसी को ध्यान कहते हैं।

शिव के कई नामों में से एक है, 'विरूपक्ष'। अर्थात जो निराकार है, फिर भी सब देखता है। हमारे चारों ओर हवा है और हम उसे महसूस भी करते हैं लेकिन अगर हवा हमें महसूस करने लगे तो क्या होगा? आकाश हमारे चारों ओर है, हम उसे पहचानते हैं, लेकिन कैसा होगा अगर वह हमें पहचानने लगे और हमारी उपस्थिति को महसूस करे? केवल हमें इस बात का पता नहीं चलता। वैज्ञानिकों को यह मालूम है और वे सापेक्षता का सिद्धान्त कहते हैं। जो देखता है दोनों दिखने पर प्रभावित होते हैं। ईश्वर हमारे चारों ओर है और हमें देख रहा है। वह हमारा पूरा परिवेश है। वह दृष्टा, दृश्य और दृष्टित है। यह निराकार दैवत्व शिव है और इस शिव तत्व का अनुभव करना शिवरात्रि है।

साधारणतया उत्सव में जागरूकता खो जाती है, लेकिन उत्सव में जागरूकता के साथ गहरा विश्राम शिवरात्रि है। जब हम किसी समस्या का सामना करते हैं, तब सचेत व जागृत हो जाते है। जब सब कुछ ठीक होता है, तब हम विश्राम में रहते हैं। आद्यंतहीनम् अर्थात जिसका न तो आदि है न ही अन्त, सर्वदा वही शिव है। सबका निर्दोष शासक, जो निरन्तर सर्वत्र उपस्थिति है। हमें लगता है शिव गले में सर्प लिए कहीं बैठे हुए हैं लेकिन शिव वह है, जहाँ सब कुछ जन्मा है, जो इसी क्षण सब कुछ घेरे हुए है, जिनमें सारी सृष्टि विलीन हो जाती है। इस सृष्टि में जो भी रूप देखते हैं, सब उसी का रूप है। वह सारी सृष्टि में व्याप्त है। न वह कभी जन्मा है न ही उनका कोई अन्त है। वह अनादि है।

शिव के पाँच रूप हैं- जल, वायु, पृथ्वी, अग्नि और आकाश। इन पाँचों तत्त्वों की समझ तत्त्व ज्ञान है। शिव तत्त्व में हम उनके पाँचों रूपों का आदर करते हैं। हम उदार हृदय से शुभेच्छा करें कि संसार में कोई भी व्यक्ति दु:खी न रहे। **सर्वे जन: सुखिनो भवन्तु**।

पृथ्वी के सभी तत्त्वों में देवत्त्व है। वृक्षों, पर्वतों, नदियों और लोगों का सम्मान किए बिना कोई पूजा सम्पूर्ण नहीं होती। सबके सम्मान को दक्षिणा कहते हैं। दक्षिणा का अर्थ है कुछ देना। जब हम किसी भी विकृति के बिना कुशलता से समाज में रहते हैं, क्रोध, चिन्ता, दु:ख जैसी सब नकारात्मक मनोवृत्तियों का नाश होता है। हम अपने तनाव, चिन्ताऐं और दु:ख दक्षिणा के रूप में प्रकृति और परिवेश को दे दें और अपना समय दुखियों पीड़ितों की सेवा को समर्पित कर दें। यही शिव की सच्ची उपासना सिद्ध होगी।

श्री कृष्ण कृपा

श्री श्री कृपा बिहारी जी

के पाटोत्सव पर

पूज्य महाराज श्री के स्नेहिल सान्निध्य में

श्री गोवर्धन परिक्रमा

श्री राधाकुण्ड से

24 फरवरी सायं 2 बजे

25 फरवरी

गीता पाठ-प्रार्थना : प्रात: 6.30 बजे

संत महाप्रसाद : प्रात :9.30 बजे

श्री कृष्ण कृपा धाम, परिक्रमा मार्ग, श्रीवृन्दावन

8899363611/22, 9368311113

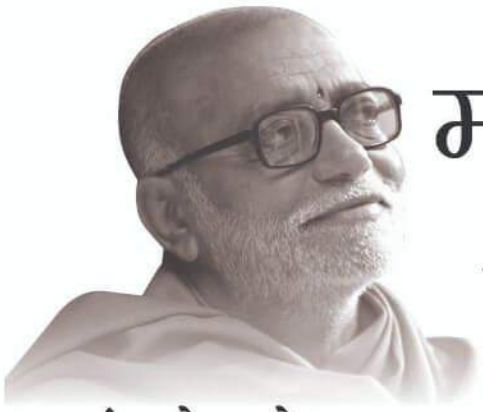

मानस गीता

(रामकथा-कुरूक्षेत्र)

19 नवम्बर - 27 नवम्बर 2022

- वन्दना तनेजा (नोएडा)

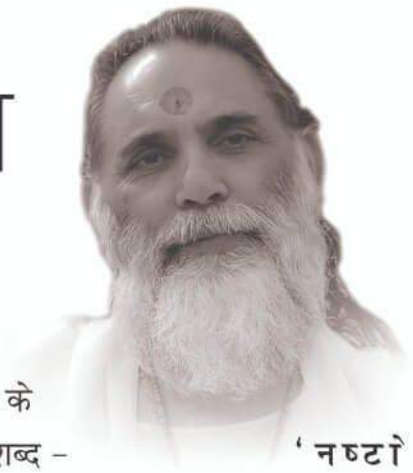

गतांक से आगे

चतुर्थ दिवस के सत्संग के शुभारम्भ के **''मामनुष्मर युद्धे च''** गीता जी के इन शब्दों का उद्धरण लेते हुए गुरुदेव ने प्राथमिकता का महत्त्व अत्यन्त प्रभावी ढंग से समझाया, मानस गीता की प्रवाही में कैकेयी के वरों के क्रम और उससे उत्पन्न अवध के असन्तुलन को महाराज श्री ने स्पष्ट करते हुए हम सबको व्यासपीठ की ओर उन्मुख किया मोरारी बापू का चतुर्थ दिवस का उद्‌बोधन;

'उमा कहूँ मैं अनुभव अपना,
सत् हरि भजन जगत सब सपना'

इन पक्तियों से शुरू हुआ- 'केवल भजन सत्य है बाकी सब मिथ्या है' निश्चित नि:सन्देह जब त्रिभुवन स्वामी की उद्‌घोषणा है यह तो हमें इसे जीवन की प्राथमिकता में लाना ही चाहिए।

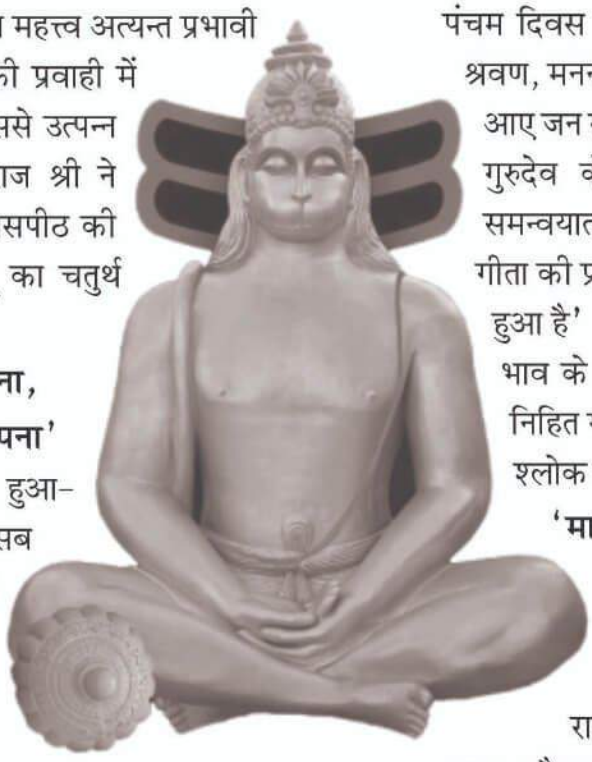

भावों की बहती मानस धारा में समूचा जनसमूह जैसे निमग्न सा हो रहा था, कभी साधकों की जिज्ञासाओं का उत्तर देते हुए, मानस के प्रति बापू का भावातिरेक तो कभी गीता जयन्ती को परम उत्सव स्वरूप में मनाने का उनका सबल प्रेरक उद्‌घोष - सब कुछ जैसे दिव्यता का स्पर्श लिए हुए था।

बापू ने मानस-गीता प्रसंग में 'अन्त:करण की शुद्धि को भक्ति की सर्वोत्तम स्थिति बताते हुए कहा- परमशुद्ध अन्त:करण का तो शास्त्र भी अनुसरण करते हैं। शास्त्र शुद्ध अन्त:करण में आशीष स्वरूप सहज निवास करते है। गीता जी के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण शब्द - **'नष्टो मोहा स्मृतिर्लब्धा'** पर प्रकाश डालते हुए बापू ने कहा मोह का नष्ट होना और स्मृतिर्लब्धा अर्थात बोध हो जाना।

पंचम दिवस की रामकथा (मानस-गीता) में श्रवण, मनन और सेवन की शुभ अभीप्सा से आए जन समूह को केन्द्रित करने में सक्षम थे गुरुदेव के प्रारम्भिक शब्द- 'बापू का समन्वयात्मक सधा हुआ चिन्तन मानस गीता की प्रवाही के रूप में हमारी प्रेरणा बना हुआ है' पूर्व-दिवस की कथा में अनपेक्षा भाव के सन्दर्भ में बापू के भाव वर्णन में निहित गीता जी के 12वें अध्याय के 16वें श्लोक का वाचन करते हुए महाराज श्री ने **'मा फलेषु कदाचन'** की अनुपम प्रेरणा से मानसगीता के अनपेक्षा प्रकरण को जोड़ते हुए, भारत के इन दो अनुपम निधि स्वरूप ग्रन्थ रामचरितमानस एवं भगवद्‌गीता का साम्य और तारतम्य स्पष्ट किया। गुरुदेव के शब्द - 'अपेक्षा रहित हो जाओ, शुचि, दक्षता, बृहदता, विशालता और आनन्द स्वभाविक आपका वरण करेंगे' जैसे कानों के माध्यम से अन्तस में प्रवेश कर गए।

सत्संग की पावन धारा के छटे सोपान में गुरुदेव का प्रारम्भिक उद्‌बोधन कुरुक्षेत्र की धर्म धरा और व्यासपीठ के वन्दन से हुआ। मानस गीता के सेव्य अनुष्ठान में षष्ठम दिवस पूज्य महामण्डलेश्वर धर्मदास जी एवं वृन्दावन के भागवत् भास्कर श्री कृष्ण चन्द्र शास्त्री जी का गुरुदेव ने स्वागत किया। श्री कृष्ण चन्द्र शास्त्री जी ने अत्यन्त भावपूर्ण शब्दों में श्री राम चरित

मानस और मोरारी बापू के लिए अपने हार्दिक स्नेह की अभिव्यक्ति की।

मानस गीता की प्रवाही में प्रवेश से पूर्व गुरुदेव ने पिछले दिन व्यासपीठ के जिज्ञासा समाधान के शब्दों की पुनरावृत्ति करते हुए - श्री राम के अवतरण की दिव्यता का उल्लास और तत्पश्चात् मानस और गीता साम्यता में यदा-कदा और जब-जब शब्दों को प्रासंगित करते मानस गीता के तात्विक और सात्विक भाव को हृदयपटल पर चिरांकित कर दिया! भगवद्गीता के सार को - ''जो जहाँ है, वहीं से अपने कर्म को निष्ठापूर्वक निर्वाहन करे तो स्वत: क्षमताएं भी विकसित होती हैं और कार्य सिद्धि भी स्वत: होगी'' बताते हुए गुरुदेव ने कहा गीता का यह तत्व श्री राम के जीवन में रमा हुआ अनुभव होता है।

मानसगीता के छठे दिन की भाव प्रवाही पूज्य बापू ने कुरुक्षेत्र की धरा को भगवद्गीता की **जन्मभूमि** और **कर्मभूमि** और बुद्धत्व तीर्थभूमि भी यही है। यहाँ युद्ध के बहाने बुद्धत्व प्रकट हुआ। यहाँ प्रारब्ध और पुरूषार्थ का संगम हुआ। बापू के शब्द - कृष्ण सामर्थ्य देकर बार-बार खड़ा भी करते हैं (उत्तिष्ठ, जाग्रत, प्राप्य वरान्निबोधत) और प्रारब्ध के वश होकर क्लीव ना होने की प्रेरणा भी! गीता की जन्मभूमि में प्रारब्ध और पुरूषार्थ दोनों का सम्मान है।

एक जिज्ञासा के उत्तर में त्याग का व्यवहारिक पक्ष बताते हुए बापू ने कहा- ''जिससे भी अशान्ति पैदा हो उसका त्याग कर दो'' जैसे **अत्याधिक प्रतिष्ठा, ईश्वर विमुख व्यक्ति** (जाके प्रिय ना राम वेदैही) का त्याग! गीता जयन्ती को दिव्य महापर्व कहते हुए पूज्य मोरारी बापू ने कहा- गीता में 'समभवामि युगे युगे' की घोषणा करने वाले श्रीकृष्ण वस्तुत: 'समभवामि क्षणे क्षणे' अर्थात प्रत्येक क्षण में प्रकट होते हैं। अध्यात्म के वास्तविक रूप का प्रतिपादन करते हुए उन्होने बताया कि जब मैं गुनगुनाता हूँ 'जाने क्या जादू भरा हुआ भगवान् तुम्हारी गीता में' तो इसका अर्थ कोई चमत्कार मत ले लेना। अध्यात्म चमत्कार में नहीं साक्षत्कार में विश्वास करता है। बापू के वो भावपूर्ण शब्द - 'मेरे लिए रोज सुबह सूर्य का उदय होना ही चमत्कार है, मौसम आने पर वर्षा होना चमत्कार है, मीलों दूर से सूर्य की किरण का कली पर पड़ने से उसका खिलना मझे चमत्कार लगता है' समर्थ से हम सबके हृदय में सृष्टिकार सर्वशक्तिमान को अनुभूत कराने में।

बापू के धाराप्रवाह सम्वाद में मानसगीता के छ: दिन कैसे बीत गए, इसका आभास हमें तब हुआ जब सातवें दिन के सत्संग के प्रारम्भ में चर्चा हुई कि इस दिव्य अनुष्ठान के दो दिन शेष हैं।

जीवन की सर्वोत्तम उपलब्धियाँ हैं, जिन्हें पाने के पश्चात् कुछ शेष नहीं रहता।

व्यासपीठ से प्रवाही मानस गीता कथा का एक-एक शब्द जैसे जीवन के उर्धवगामी पथ पर ले जाने की अनेक-अनेक सम्भावनाओं से पूरित था। गुरुदेव के कथनानुसार आवश्यकता थी तो पात्र के खुला, खिला और खाली होने की। सत्संग के दिनों का क्रम आगे बढ़ने के साथ-साथ हजारों लोगों के हृदय में मानस के प्रति, गीता के प्रति और गीता जयन्ती के प्रति उल्लास और आनन्द का आरोह भी स्पष्ट अनुभव हो रहा था।

क्रमश:

लो-हरी अब लोहरी पे
उपहार हमको चाहिए
इस बरस पिछले से ज्यादा
प्यार हमको चाहिए

इतना हक तो बनता ही है
कि कहें हम आपसे
आपके हैं-आपका
आधार हमको चाहिए

जो भी भीतर खोट है
तप कर निकल जाए मेरा
आँच में वो असर
बार-बार हमको चाहिए

हर खुशी में हो हरी
गम में भी गोविन्द साथ हो
आखिर दम तक
यह एतबार हमको चाहिए

गीता और विज्ञान

आज भी दुनिया के कई महान रिसर्चर भगवद् गीता को पढ़ते हैं। किसी धार्मिक मकसद के लिए नहीं बल्कि एक प्योर साइंस बुक की तरह। ऐसी बहुत सारी थ्योरी हैं जिसे आप भगवद् गीता में कही बातों से रिलेट कर सकते हैं, भले ही आपका भगवान् जैसी किसी शक्ति पर भरोसा हो या ना हो, लेकिन आपको यह तो पता ही होगा कि हमारे रोज के जीवन में बहुत सारे प्रॉब्लम के हल इस पवित्र बुक में मौजूद हैं, जिन समस्याओं को लेकर हम काफी परेशान रहते हैं। आप लोगों में से जो लोग भी धार्मिक नहीं हैं उन लोगों से मैं सिर्फ एक बात कहना चाहता हूँ कि आज आप गीता को किसी धर्म की पुस्तक की तरह मत देखना, आप इसे एक साधारण पुस्तक समझो, जिसे हजारों साल पहले लिखा गया था। वैसे तो गीता को साइकोलॉजी के लिए बहुत ही अच्छी पुस्तक माना जाता है। लेकिन लोगों को यह नहीं पता कि इसमें आपको बायोलॉजी, फिजिक्स, मैथ और एस्ट्रोलॉजी जैसे कई विषयों के बारे में कई ऐसी बातें हैं जिन के आधार पर बड़ी-बड़ी खोज यानी कि डिस्कवरी हुई है। पहले एक बात और क्लियर कर दें कि जो भी बातें इसमे बतायेंगे, आप तुरन्त जजमेन्टल होकर यानी अपनी कोई भी धारणा बनाने से पहले इन बातों को ध्यान से पढ़ना और फिर अपना ओपिनियन यानी राय बनाना।

1. थर्मोडायनेमिक्स लॉ :- फर्स्ट लॉ ऑफ थर्मोडायनेमिक्स कहता है कि एनर्जी को न तो बनाया जा सकता है और न ही खत्म किया जा सकता है। उसे बस हम एक फॉर्म से दूसरे फॉर्म में कन्वर्ट कर सकते हैं, यानी कि बदल सकते हैं, जिसे हम कंजर्वेशन ऑफ एनर्जी भी बोलते हैं। उदाहरण के लिए आपने जनरेटर देखा होगा। उसमें एक मैगनेटिक क्वायल लगी रहती है। जब जनरेटर मैकेनिकली घूमता है तो उसके साथ एक मैग्नेटिक क्वायल भी घूमती है, और उसी से बिजली पैदा होती है। यानी वह मैकेनिकल एनर्जी को इलेक्ट्रिक एनर्जी में कन्वर्ट करता है, इस लॉ को गीता में कुछ इस तरह से बताया गया है... भगवद्गीता के अध्याय 2 श्लोक 23 में लिखा है कि हमारी आत्मा यानी कि **'सोल एनर्जी'** कभी खत्म नहीं होती, वह बस अपना शरीर बदलती है। अब अगर आप सोच रहे हो कि यहाँ तो आत्मा की बात हो रही है, तो इसका एनर्जी से क्या लेना देना। आत्मा भी तो एक एनर्जी ही हैं। **'मॉडर्न साइंस'** भी इसे एक एनर्जी ही मानता है जो कि हमारे मरने के बाद हमारे बॉडी से रिलीज होती है। अब चाहे वह बड़े अमाउन्ट में हो या फिर बहुत ही छोटे अमाउन्ट में, लेकिन कोई तो ऐसी एनर्जी है जो हमारे बॉडी से रिलीज होती है। इसे बहुत ध्यान से समझो... क्योंकि इतने सालों पहले किसी ने यह आईडिया यानी कि इस थ्योरी का बेस दिया था। जिसे आज मॉडिफाई रूप से आप **'कंजर्वेशन ऑफ एनर्जी'** बोलते है।

2. मेडिटेशन :- चाइना और जापान के कुछ ऐसे मेडिटेशन टेक्निक्स हैं जिससे हम अपने सब कॉन्शियस माइंड को कन्ट्रोल कर सकते हैं या फिर हम इसे डेली रूटीन में प्रयोग करके अपने स्ट्रेस यानी तनाव, गुस्से और फोकस न रह पाने की परेशानी को दूर कर सकते हैं और अपने **'पीस ऑफ माइंड'** यानी कि अपने मन को शान्त करके अपनी समस्या का हल ढूँढ सकते हैं। लेकिन भगवद्गीता के अध्याय 6 जिसका नाम है **"ध्यान योग"**

उसमें इन टेक्निक्स की सारी डिटेल और उसके फायदे बताए गए हैं। ऐसी टेक्निक्स जिसे चाइना और जापान अपना बताते हैं। असल में वह सभी साइंटिफिक टेक्निक को गीता के अध्याय 6 में बहुत ही अच्छे से समझाया गया है।

3. आर्टिफिशियल लाइफ :- भगवद् गीता में लिखा है... **अहम् बीजप्रद: पिता**- इसका मतलब है कि इस दुनिया की सारी जिन्दगी यानी लाइफ किसी एक दूसरे लाइफ से पैदा होती है, यानी 'स्पोन्टेनियस जनरेशन' जैसी कोई भी चीज नहीं होती है। स्पोन्टेनियस जनरेशन का मतलब "ऐसी जिन्दगी जो किसी 'नॉन लिविंग' यानी मैटेरियल से पैदा हुई है" उदाहरण के लिए एक ऐसा लिविंग सेल जो किसी नॉन लिविंग थिंग यानी एक मशीन से पैदा हुआ हो तो उसे हम स्पोन्टेनियस जनरेशन कहेंगे। अब आप में से कुछ लोगों ने इस थ्योरी के बारे में सुना होगा जिसमें यह बताया गया है कि लाइफ मैटर से क्रिएट की जा सकती है। लेकिन सबसे पहले मैं आपको बतला दूँ कि यह कोई थ्योरी नहीं है, बल्कि यह एक हाइपोथिसिस है यानी कि यह सिर्फ एक कल्पना है। किसी ने आज तक यह सिद्ध नहीं किया है कि लाइफ को मैटर से क्रिएट किया जा सकता है। बल्कि एक साइंटिस्ट लुईस पाश्चर *(Louis Pasteur)* ने अपनी 'थ्योरी ऑफ स्पोंटेनियस जनरेशन' में यह दिखाया है की स्पोंटेनियस जनरेशन से लाइफ नहीं बनाई जा सकती। उन्होंने ही सबसे पहले 'पैसराईजेसन टेक्निक्स' को खोजा था। उन्होंने दूध को उबालकर पैसेराइज कर दिया यानी कि उसमें से सभी जीवित चीजों को निकाल दिया। जिसकी वजह से वह दूध काफी महीनों तक खराब नहीं होता था, यानी कि उसमें कोई फंगस नहीं पड़ता था। दोस्तों फंगस एक तरह का लिविंग बैक्टीरिया होता है, इस एक्सपेरिमेन्ट से उन्होंने यह साबित किया कि लाइफ स्पोन्टेनियस जनरेशन से नहीं बनाई जा सकती और भगवद्गीता में भी यह बात कही गई है।

4. सिमुलेशन :- 'एलोन मस्क' और 'स्टीफन हॉकिंस' जैसे बड़े फ्यूचरिस्टिक यानी कि हमेशा दूर की सोचने वाले लोगों ने यह कहा है कि हमारी दुनिया एक मायाजाल यानी एक सिमुलेशन हो सकती है। सिमुलेशन का मतलब होता है दोस्तों, जहाँ हम सोचने पर मजबूर हो जाते हैं कि कहीं हमारी यह दुनिया एक सिमुलेशन यानी कम्प्यूटर प्रोग्राम तो नहीं है। भगवद्गीता में भगवान श्री कृष्ण ने इस दुनिया को एक मायाजाल यानी मैट्रिक्स बताया है। उनके कहने के मुताबिक यह हुआ है वह इस दुनिया के प्रोग्रामर हैं और यह यूनिवर्स एक कम्प्यूटर प्रोग्राम है। और ऐसे बहुत सारे यूनिवर्स यानी कम्प्यूटर प्रोग्राम मौजूद हैं, जिसके लिए अलग-अलग डेवलपर्स हैं। लोगों का ऐसा भी कहना है कि जब ब्रह्मा जी को घमण्ड हुआ था कि उन्होंने इस दुनिया का निर्माण किया है तब भगवान् श्री कृष्ण ने अलग-अलग ब्रह्मा जी को बुलाकर उनका यह भ्रम तोड़ा था। यानी कि उन्होंने अलग-अलग ब्रह्माण्ड के डेवलपर्स को बुलाया था। मल्टी यूनिवर्स की थ्योरी भगवद्गीता में हजारों साल पहले ही बताई गई थी। जिसे आज साइंटिस्ट एक बहुत स्ट्रांग हाइपोथिसिस मानते हैं। जैसे हमारी दुनिया से सभी कम्प्यूटर किसी नेटवर्क से जुड़े हुए होते हैं, उसी तरह अलग-अलग यूनिवर्स यानी कम्प्यूटर प्रोग्राम भी आपस में किसी नेटवर्क से जुड़े हुए हैं और उस नेटवर्क का नाम है ब्लैक होल। 'मल्टी यूनिवर्स' और 'पैरेलल यूनिवर्स' हाइपोथिसिस में यह माना गया है कि कोई भी चीज 'ब्लैक होल' में चली जाती है तो वह किसी दूसरे कम्प्यूटर सिमुलेशन यानि किसी दूसरे यूनिवर्स में चली जाती हैं। क्या आपने कभी सोचा था भगवद्गीता में इतनी एडवांस थ्योरी का भी वर्णन हो सकता है। ऐसे और भी बहुत सारी बातें हैं जो साइंस और साइकोलॉजी के फील्ड में गीता में कही गई सभी बातों को सही साबित करती हैं। आपको शायद यह बात पता नहीं होगी कि भगवद्गीता सिर्फ हिन्दी में ही नहीं बल्कि इंग्लिश, जापानीज, चाइनीस, जर्मन और बहुत सारे लैंग्वेज में पब्लिश हो चुकी है और हमें इस बात पर गर्व होना चाहिए कि हमारे पास एक ऐसे ज्ञान का भण्डार है जिसे पूरी दुनिया जानना चाहती है। मगर भारत में लोग "भगवद्गीता" को एक धार्मिक किताब समझते हैं और इसीलिए जो यह सोचते हैं कि उसमें बस भगवान् और उनकी ही बातें लिखी होगी। लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं है। यहाँ आपको गीता और साइंस के बीच के रिलेशन का 0.1 पर्सेंट भी नहीं बताया है। गीता में बहुत सारी बातें लिखी हैं जो आज साइंस ने साबित की हैं और अगर आपको अपनी लाइफ के कुछ बड़े निर्णय लेने हैं या फिर किसी ऐसे प्रॉब्लम का हल निकालना है जो आपका पीछा ही नहीं छोड़ रही तो, आपको गीता पढ़ना जरूर शुरू करना चाहिए। अगर आप उसमें लिखी सभी बातों को समझ गए, तो आपके पास कोई भी ऐसा सवाल नहीं बचेगा जिसका जवाब आपके पास नहीं हो।

- डॉ. मारकन्डे आहूजा,
उपाध्यक्ष जीओ गीता
markandayahuja@gmail.com

जिज्ञासा-समाधान

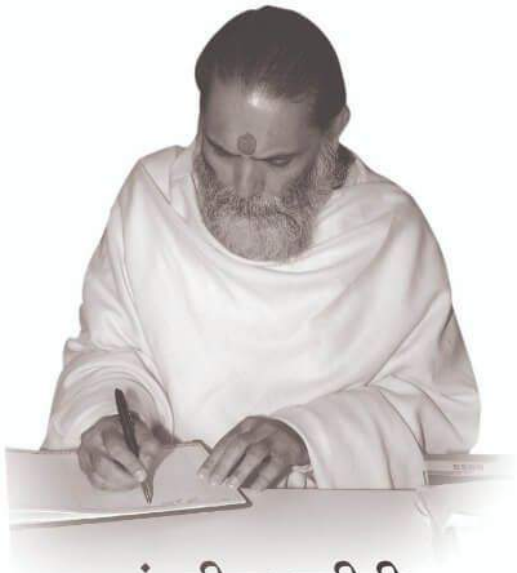

म. मं. गीता मनीषी स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी महाराज

प्रश्नः- आपका यह मनोभाव कैसे जगा कि गीता प्रेरणाओं के द्वारा मनुष्य जीवन को परिवर्तित किया जा सकता है? आप पिछले 30 वर्षों से यह कार्य किस प्रकार से कर रहे हैं?

उत्तरः- श्रीमद्भगवद् गीता में निहित श्रीकृष्ण-अर्जुन संवाद इतना दिव्य एवं अलौकिक है कि आज के वातावरण में व्याप्त विषाद को भी प्रसाद में बदल दे। आज चारों ओर दवाब व तनाव का माहौल है, तब केवल श्रीमद्भगवद् गीता ही समस्या का समाधान के रूप में नजर आती है। गुरु प्रेरणा से हमें भी यह अनुभव हुआ कि इस अद्भुत ग्रन्थ से मानव जाति की समूची समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। पिछले 30 वर्षों में हमारे जीवन का मुख्य ध्येय इस बात का प्रचार व प्रसार करना रहा कि विभिन्न क्षेत्रों, व्यवसायों व सेवा प्रकल्पों में श्रीमद्भगवद गीता किस रूप में कार्य कर सकती है। वास्तव में श्रीमद्भगवद गीता सम्पूर्ण प्राणी जगत के कल्याण का महामंत्र है।

प्रश्नः- विदेशों में श्रीमद्भगवद गीता के प्रति लोगों के क्या मनोभाव देखने का मिलते हैं?

उत्तरः- आज पूरा विश्व अवसाद की समस्या से जकड़ा हुआ है। हमारे देश की अपेक्षा विदेशों में यह समस्या अधिक व्यापक स्तर पर है। इस समस्या का सशक्त समाधान केवल श्रीमद्भगवद गीता ही है। जब विदेशी लोगों को गीता सन्देश समस्या समाधान के रूप में दिया जाता है तो इस पवित्र ग्रन्थ के प्रति उनकी आस्था सुदृढ़ प्रतीत होती है।

प्रश्नः- ब्रिटिश संसद में श्रीमद्भगवद गीता की स्थापना के समय आपके क्या मनोभाव थे?

उत्तरः- ब्रिटिश संसद के चेयरमैन श्रीमद्भगवद गीता की प्रतियाँ अपने सिर पर रख कर लाए थे। केवल हमारे लिए ही नहीं अपितु पूरे भारतवर्ष के लिए यह गौरवपूर्ण क्षण थे। ब्रिटिशों ने हमारे राष्ट्र पर दो वर्षों से भी अधिक शासन किया लेकिन आज श्रीमद्भगवद गीता उन पर शासन करने के लिए तैयार थी। यह वैश्विक प्रेरणा के क्षण थे कि एक विशेष रूप में गीता का विस्तार हो रहा था।

प्रश्नः- श्रीमद्भगवद गीता को राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित करने की प्रेरणा देने के पीछे आपके क्या मनोभाव हैं?

उत्तरः- श्रीमद्भगवद गीता अन्तर्राष्ट्रीय महत्त्व का ग्रन्थ है। ब्रिटेन, मॉरीशस, कनाडा सहित कई अन्य देशों ने श्रीमद्भगवद गीता को अपनी संसद में गौरवपूर्ण स्थान दिया है। श्रीमद्भगवद गीता को राष्ट्रीय ग्रन्थ घोषित करने से इसके संरक्षण का दायित्व सरकार के साथ जुड़ जाएगा और सरकार

भी इसके प्रचार-प्रसार के लिए कार्यरत होगी। सरकार की ओर से श्रीमद्भगवद गीता को राष्ट्रीय ग्रन्थ का दर्जा प्राप्त होने पर विश्व के अन्य देशों में इस ग्रन्थ की मान्यता और अधिक बढ़ेगी।

प्रश्नः- विद्यार्थी जीवन से अध्यात्म की ओर आपका जुड़ाव किस प्रकार हुआ ?

उत्तरः- विद्यार्थी जीवन में जब हम युवा वर्ग को मानसिक रूप से अस्वस्थ देखते थे एवं सब कुछ होनेके बावजूद उनमें अशान्ति का अनुभव करते थे तो एक प्रश्न जिज्ञासा के रूप में उठता था कि शान्ति कहाँ है? मानसिक शान्ति के बिना जीवन अधूरा है। इस अधूरे जीवन को किस प्रकार पूर्णता की ओर ले जाया जाए। इस प्रश्न के समाधान में गुरु मिले एवं श्रीमद्भगवद गीता मिली और इसी समाधान की खोज में अध्यात्म की राह पर कदम बढ़ने लगे।

प्रश्नः- श्रीमद्भगवद गीता के प्रचार-प्रसार के अतिरिक्त आप समाज कल्याण के कौन-कौन से क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं ?

उत्तरः- केवल व्यासपीठ से सत्संग करना एवं गीता का प्रचार-प्रसार करना ही हमारे जीवन का ध्येय नहीं है अपितु हमारी कामना है कि व्यवहारिक सेवा भी की जानी चाहिए। व्यवहारिक सेवा का अर्थ है किसी रोते के आँसू पोंछना, किसी अभावग्रस्त के भाव की पूर्ति करना, गौ माता की रक्षा एवं सेवा करना, असहाय एवं वृद्धों की सेवा करना, चिकित्सा सेवा करना इत्यादि। सेवा के इन विभिन्न प्रकल्पों में श्रीकृष्ण कृपा सेवा समिति कार्यरत है। जीओ गीता श्रीमद्भगवद गीता आधारित जीवन जीने की अभिप्रेरणा एवं आहवान् है। इसके अतिरिक्त नेत्रहीन विद्यार्थियों के लिए ब्रेल लिपि में गीता का अनुवाद करवाया गया। जेल में रह रहे कैदियों के लिए समय-समय पर गीता सत्संग का आयोजन करवाया जा रहा है ताकि उनके जीवन की निराशा दूर हो और वह सभी सन्मार्ग पर अग्रसर हो सकें।

क्रमशः

(गीता उपदेश का पूर्व वृत्तान्त)

महाभारत सार

गताङ्क से आगे :—

मैं समझ गई, भीष्म पितामह, द्रोणाचार्य और महात्मा विदुर में अब पुरूषार्थ नहीं रहा। तभी तो ये सब कुरुवंश बड़े-बूढ़े लोग, राजा के इस भयंकर अधर्म को बैठे देख रहे हैं और कुछ कर नहीं सकते।''

इस प्रकार युधिष्ठिर आदि पांडवों को दु:खित और दु:शासन के हाथ से अपमान होने के कारण द्रौपदी को शोक-विह्वल देखकर धृतराष्ट्र के पुत्र धर्मात्मा विकर्ण से नहीं रहा गया। उन्होंने ऊँचे स्वर से सभासदों से कहा- '' हे सभासदो, आप लोग विचार करके, पक्षपात छोड़कर द्रौपदी के प्रश्न का स्पष्ट उत्तर क्यों नहीं देते? हम लोग यदि विवेक से द्रौपदी के प्रश्न का ठीक उत्तर न देंगे, तो अधर्मभागी होने के कारण नरकगामी होंगे। भीष्म पितामह और महाराज धृतराष्ट्र ये, दोनों कुरुवंश में बूढ़े हैं। इन्होंने सलाह करके अभी तक कुछ नहीं कहा। महामति विदुर भी चुप हैं। भरतकुल के गुरू कृपाचार्य और द्रोणाचार्य, दोनों ब्राह्मण श्रेष्ठ हैं। इन्होंने अभी तक द्रौपदी के प्रश्न का ठीक उत्तर क्यों नहीं दिया? और भी जो राजा लोग इस सभा में आये हुए हैं, वे भी काम और क्रोध (मित्रता और शत्रुता) के भाव को छोड़कर अपनी-अपनी बुद्धि के अनुसार इस बारे में कहें। हे राजा लोगो! कल्याणरूपिणी द्रौपदी बारम्बार आप लोगों से जो प्रश्न कर रही है, उसके बारे में विचार करके, जिसकी समझ में जो आये, उत्तर दीजिये।''

क्रमशः

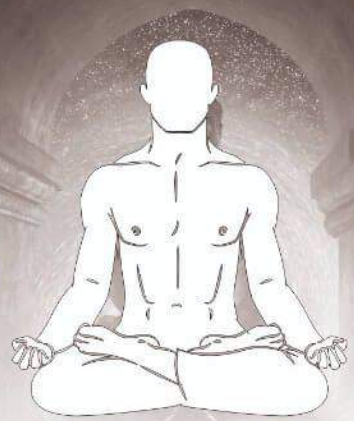

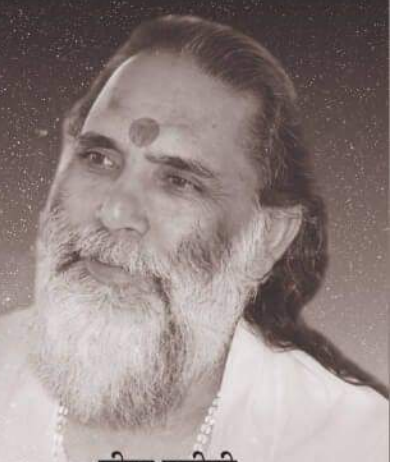

-गीता मनीषी
स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी महाराज

ज्ञान साधना

जीवन की महत्ता एकाग्र अवस्था में है

गतांक से आगे -

ध्यान का सार एकाग्रता है। एकाग्रता के बिना जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल होने की तनिक भी आशा नहीं की जा सकती। जब तक आपका मन संकल्प-विकल्पों की उधेड़-बुन मे उलझा हुआ है या चिन्ताग्रस्त है- स्वयं ही विचार करके देखिए- क्या कीमत है उस समय आपके जीवन की? लेकिन दूसरी ओर यदि आप एकाग्रता की स्थिति में हैं, मन अपने-आपमें शान्त है, तब देखिए अपने-आपको-किस दिव्य आनन्द एवं महानता की स्थिति में पाएंगे आप अपने को। एकाग्रता के अभाव का अर्थ है- अस्थिरता, अशान्ति, निराशा और बेचैनी! जब जीवन किसी भी कारणवश इन्हीं का शिकार होता है, तो आप अपने को अशान्त अथवा बेचैन पाते हैं। अशान्ति की उन मायूस घड़ियों में कितना तुच्छ सा लगता है अपना जीवन! अपना जीवन अपने ही लिए भार रूप एवं घृणित सा प्रतीत होने लगता है। जीवन के अशान्त एवं निराश क्षणों में आपने ऐसा आजमाया होगा। अभिप्राय स्पष्ट है कि जीवन की महत्ता एकाग्र अवस्था में ही है और एकाग्रता ही मानव जीवन की अनमोल निधी है; जिससे लाभान्वित होकर जीवन को सार्थक किया जा सकता है, अन्यथा कदापि नहीं।

बिखरी हुई शक्ति को केन्द्रित करें

अनाज की एक बन्द बोरी कितनी मूल्यवान है? किन्तु यदि उसे खोलकर अनाज का एक-एक दाना इधर-उधर बिखरा दिया जाए, तब आंकिये- उसकी कीमत! क्या कीमत रह जाएगी उसकी? यही दशा मन की है। मन को एकाग्र करके चारों ओर से इसकी बिखरी हुई शक्ति को केन्द्रित कीजिए और देखिए इसकी कीमत, इसकी महत्ता! वही मन जब यहाँ-वहाँ बिखरा हो, अनेक प्राणी-पदार्थों के चिन्तन में लगा हो तो मन की वह स्थिति भी देखिए। सचमुच! कितना धोखा कर रहे हैं आप अपने ही साथ। कैसा निरर्थक, सारहीन, दुखदायी खिलवाड़ कर रहे हैं आप अपने जीवन के साथ- एकाग्रता में निहित महान शक्ति को न पहचान कर। यद्यपि इस समय अज्ञानतावश आप इसके दुष्परिणाम नहीं देख पा रहे हैं, तथापि मन का यह बिखराव समय पाकर आपके अपने लिए ही असंख्य दुखों, कष्टों एवं रोगों का कारण बन जाएगा- न केवल इस लोक में बल्कि परलोक में भी। जब वर्तमान में ही आप शान्त-स्थिर नहीं हैं, तो आगामी जन्म में सुखी रहने की कल्पना कैसे कर सकते हैं?

क्रमशः

संत उद्बोधन

—ब्रह्मलीन श्रद्धेय स्वामी श्रीशरणानन्द जी महाराज

प्रिय साधकों! मनुष्य को अपने कर्तव्य का पालन तो अवश्य करना चाहिये, किन्तु उसमें रस नहीं लेना चाहिये। कारण, उसमें रस लेने से करने का अन्त नहीं होता और करने का अन्त हुए बिना विश्राम नहीं मिलेगा।

देखो, करना तो करने का अन्त करने के लिये ही किया जाता है। सदा करते ही रहना– यह तो कोई सिद्धान्त नहीं है और न यह किसी को भाता है।

करने में रस लेने से करने की राग की निवृत्ति नहीं होती और चाह–युक्त करने से नये राग की उत्पत्ति होती रहती है। राग के रहते किसी का भी कल्याण नहीं हो सकता– यह पक्का सिद्धान्त है।

करना तो लोक हितार्थ होना चाहिये, निज–सुख के लिये करना भोग है। पर हित के भाव से करने से राग की निवृत्ति और करने का अन्त हो जाता है। इसलिये जो हम कर सकते हैं, उसको सही ढंग से कर दें, बाकी न रखें, और जो नहीं कर सकते, उसको भूला दें अर्थात् उसके करने की न सोचें।

करना शेष रहने के कारण ही जीने की आशा होती है और जीने की आशा के रहते मृत्यु का भय उत्पन्न होता है। नहीं तो यह जीव तो अमर है, प्रभु का अंश ही है, इसकी मृत्यु कैसी ? परन्तु जीने की आशा रहने के कारण मरने से भय लगता है।

जब तक जीने की आशा है, तब तक मरने का भय नहीं मिट सकता और करने लायक बाकी बना रहने से जीने की आशा नहीं मिटती।

जो व्यक्ति करने योग्य काम को सही ढंग से पूरा कर देता है, वह फिर जीने की आशा किसलिये रखेगा ?

करने लायक को सही ढंग से पूरा करते ही जीने की आशा और मरने का भय मिट जाता है। यही सही ढंग से करने की पहचान है। जीने की आशा और मरने का भय मिट जाना ही मुक्ति है। इसलिये करने लायक को सही ढंग से पूरा करके करने का अन्त कर देना चाहिये और सब प्रकार की कामनाओं का त्याग करके चाह रहित हो जाना चाहिये।

मनुष्य के जीवन में करना और पाना ही श्रम है। अतएव इसका अन्त होने पर ही सच्चा विश्राम है। चाह मात्र से और तो कुछ होता नहीं। हाँ, बन्धन अवश्य हो जाता है।

चाह तो एकमात्र भगवान् की ही होनी चाहिये, करने पाने की नहीं। जिसके हृदय में भगवान् को पाने की सच्ची लालसा उत्पन्न हो गयी, समझो उसके सब साधन हो गये। इसलिये भगवत्–प्राप्ति की लालसा रखो, यही सबका सार है। ॐ आनन्द !

कुरुक्षेत्र की दिव्य धरा पर हुआ

श्री राम कथा मानस गीता

का अद्भुत एवं अलौकिक आनन्द

केवल महाकाव्य नहीं अपितु महामंत्र है श्री रामचरितमानस व श्रीमद्भगवद् गीता

श्री राम कथा मानस गीता की नव - दिवसीय यात्रा का द्वितीय पड़ाव

गतांक से आगे...

- सुमित गोयल, कुरुक्षेत्र

जीओ गीता व गीता ज्ञान संस्थानम् कुरूक्षेत्र के तत्वाधान में कृष्ण पक्ष की एकादशी को हनुमान चालीसा व मंत्रोच्चारण के साथ श्री राम कथा मानस गीता के द्वितीय दिवस का विधिवत आरम्भ हुआ। सन्त शिरोमणी मुरारी बापू जी मानस गीता अमृत वर्षा के लिए व्यासपीठ पर आसीन हुए। हरियाणा के राज्यपाल महामहिम श्री बंडारू दत्तात्रेय, भाजपा प्रदेशाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश धनखड़, खेलमंत्री श्री संदीप सिंह, कुरूक्षेत्र सांसद श्री नायब सिंह सैनी, व कुरूक्षेत्र विधायक श्री सुभाष सुधा ने कथा पण्डाल में उपस्थित होकर व्यासपीठ का आर्शीवाद प्राप्त किया।

हरियाणा के राज्य महामहिम श्री बंडारू दत्तात्रेय ने कहा कि विश्व शान्ति के लिए श्री रामकथा जैसे कार्यक्रमों का होना जरूरी है। श्रीरामचरितमानस सम्पूर्ण समाज के लिए अद्भुत प्रेरणा स्त्रोत है। श्रीमद्भगवद्गीता महोत्सव में श्री राम कथा मानस गीता का व्याख्यान एक अतुलनीय संगम है। इस अद्भुत व अलौकिक संगम से मूल्य आधारित समाज का सृजन सम्भव होगा। उन्होंने कहा कि तुलसीदास ने श्री रामचरितमानस के माध्यम से भगवान् श्री राम के चरित्र को प्रस्तुत कर सामाजिक मूल्यों को स्थापित करने का प्रयास किया है। सामाजिक मूल्य व्यक्ति के हित और स्वार्थ से ऊपर होते हैं। श्री राम का चरित्र लोकमानस का आदर्श चरित्र है। श्री राम मर्यादा पुरूषोत्तम आदर्श के प्रतीक हैं। श्री राम न केवल भारत भूमि का इतिहास हैं बल्कि वर्तमान और स्वर्णिम भविष्य भी हैं। श्री राम सृष्टि के कण-कण में विद्यमान हैं एवं अन्न और जल के समान सुलभ हैं।

प्रदेशाध्यक्ष ने श्रोताओं को सम्बोधित करते हुए कहा कि हरियाणा धर्मभूमि के साथ-साथ किसान, जवान व विज्ञान की कर्मभूमि है। जहाँ एक ओर रामायण मूल्यों का युद्ध है, वहीं दूसरी ओर महाभारत मूल्यों की स्थापना के लिए युद्ध है। दोनों महाग्रन्थ हमें प्रेम, त्याग, धर्म और कर्म की परिभाषा सिखाते हैं। जहाँ रामायण में कर्मपरायणता के लिए त्याग है, वहीं महाभारत में धर्म स्थापना के लिए कर्म परायणता की प्रेरणा है।

श्री राम कथा मानस गीता के सूत्रधार गीता मनीषी स्वामी श्री ज्ञानानन्द जी महाराज ने अपने आशीर्वचनों में कहा कि मार्गशीर्ष मास सभी मासों में श्रेष्ठ है क्योंकि भगवान् श्री कृष्ण ने स्वयं कहा है कि मासों में मार्गशीर्ष मेरा ही रूप है। इसी मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथी को श्रीमद्भगवद् गीता का अवतरण कुरूक्षेत्र की दिव्य धरा पर हुआ था। अन्तर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के अवसर पर श्री राम कथा मानस गीता का आयोजन सोने पर सुहागा है। उन्होंने श्रीमद्भगवद्गीता के उपदेशों की ओर संकेत करते हुए बताया कि यह अद्भुत व अकल्पनीय भारतीय परम्परा का गौरव है जो विषाद को भी प्रसाद बना देने का सामर्थ्य रखता है। श्री रामचरितमानस में श्रीमद्भगवद्गीता पूर्ण रूप से समाहित है। धर्म वह नहीं है जो संकीर्णताओं में उलझा रहे बल्कि हमारे विस्तृत सदाचार, परम्पराऐं, मूल्य व आदर्श धर्म के वास्तविक रूप हैं

रमणरेती धाम से कार्ष्णि स्वामी गुरू शरणानन्द जी महाराज ने अपने आशीर्वचनों में कहा कि भक्ति श्रद्धा व विश्वास के दो रूप हैं। गुरू के प्रति परिपूर्ण श्रद्धा व समर्पण से परिपूर्ण फल प्राप्त होते हैं। अगर मनुष्य स्वयं को प्रभु को सौंप दे तो उसे किसी भी बात की चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। वास्तव में

माता, पिता, गुरू व सर्वस्व परमात्मा ही है। हमें प्रतिदिन प्रभु के चरणों में प्रार्थना करनी चाहिए कि हमें उनकी शरणागति प्राप्त हो जाए। अगर मनुष्य के भीतर राम व भगवद्गीता अवतरित हो जाए तो उसे जीवन की पूर्णता प्राप्त हो जाती है।

गुजरात से हिन्दू धर्माचार्य सभा के संयोजक एवं महामंत्री स्वामी परमात्मानन्द जी महाराज ने कहा कि कुरूक्षेत्र की भूमि अत्यन्त पावन व पवित्र है जहाँ स्वयं भगवान् श्री कृष्ण ने श्रीमद्भगवद्गीता का उपदेश दिया। मनुष्य के जीवन में निरन्तर महाभारत है। एक ओर मनुष्य की दूषित भावनाऐं, बेकाबू आवेग व नकारात्मक प्रतिक्रियाऐं दुर्योधन का रूप हैं वहीं दूसरी ओर मनुष्य की सकारात्मक बुद्धि पाण्ड़वों का रूप है और इन दोनों के मध्य ही निरन्तर युद्ध चलता रहता है। श्रीमद्भगवद्गीता धर्म, नीति व कर्त्तव्य के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है।

व्यासपीठ पर विराजमान पूज्यपाद मुरारी बापू जी ने कथामृत वर्षा करते हुए कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता का मूल केन्द्र अर्जुन-कृष्ण संवाद है जिसके साक्षी स्वयं हनुमान जी हैं। वास्तव में जहाँ संवाद है वहाँ गीता है। श्रीरामचरितमानस एव श्रीमद्भगवद्गीता महाकाव्य ही नहीं अपितु महामंत्र हैं। जब मनुष्य मोह व शोक से ग्रस्त हो तो मनुष्य को गीता के वचनों का स्मरण करना चाहिए। श्री रामचरितमानस व श्रीमद्भगवद्गीता दोनों समूची मानव जाति की दृष्टि हैं। उन्होंने दोनों की समानता पर चर्चा करते हुए बताया कि श्रीरामचरितमानस में 18 स्थानों से गीता प्रकट हो रही है और श्रीमद्भगवद्गीता में भी 18 अध्याय है। उन्होंने बताया कि जब श्री राम वनवास के लिए जा रहे थे और मार्ग में एक वृक्ष के नीचे संन्यासी के वेष में विश्राम की मुद्रा में थे। यह छवि देखकर निषाद को विषाद हुआ तो लक्ष्मण गीता अवतरित हुई। जब राम - रावण युद्ध हो रहा था तब भगवान् श्री राम नंगे पाँव थे और रावण रथ पर सवार था। यह दृश्य देखकर विभीषण को विषाद हुआ तो धर्मरथ गीता का अवतरण हुआ। श्रीमद्भवद्गीता भगवान् का हृदय है। भगवान् श्री कृष्ण के विराट रूप के दर्शन अर्जुन व दुर्योधन दोनों को हुए थे परन्तु दुर्योधन ने द्वेष दृष्टि से उनके दर्शन किए जबकि अर्जुन ने दिव्य दृष्टि से प्रभु की इस अद्भुत झाँकी के दर्शन किए। किसी भी मनुष्य को दिव्य दृष्टि गुरू चरणों की रज से प्राप्त होती है क्योंकि चरण रज से शिष्य अपने गुरू का कृपा पात्र बनता है। श्रीमद्भगवद्गीता का उद्गम स्थल कुरूक्षेत्र है जबकि मानस गीता का उद्गम स्थल पंचवटी है। मानस गीता में शरणागति पहले है जबकि श्रीमद्भगवद्गीता में शरणागति बाद में है। रामायण व महाभारत दोनों छल युद्ध है। परन्तु दोनों में जहाँ धर्म व कर्म है वहाँ साक्षात् प्रभु उपस्थित है। श्रीमद्भगवद्गीता श्री कृष्ण के मुखारविन्द से प्रकट हुई तो मानस गीता स्वयं भगवान् श्री शिव के मुखारविन्द से प्रकट हुई है। मानस गीता का प्राकट्य दिवस श्री राम का प्रकट दिवस ही माना गया है। गीता समूची मानव जाति की दृष्टि से बदलने की सामर्थ्य रखती है। जहाँ भगवद् संवाद है वहाँ विवेक उत्पन्न होता है और विवेक से मनुष्य सही दिशा की ओर अग्रसर हो सकता है।

इस अवसर पर निर्वाणी अखाड़ा हनुमानगढ़ी से गौरी शंकर दास जी महाराज व ऋषिकेश से महन्त ईश्वर दास जी महाराज मुख्य रूप से उपस्थित रहे हैं। द्वितीय दिवस की कथा का समापन श्री रामायण जी की आरती के साथ हुआ।

क्रमशः

श्वेताम्बर धारी कलिमल हारी,
गीता ज्ञान की लिये मशाल,
शहर-शहर में घूम रहे हैं,
कृष्ण प्रेम की लेकर ढाल।
गीता-रामायण साथ लिये हम,
आगे बढ़ते जायेंगे,
ज्ञान, कर्म, भक्ति का मार्ग,
जन-जन को दिखलायेंगे।
स्वामी ज्ञानानन्द महाराज जी लेकर आये गीता आज,
गीता पढ़ो, आगे बढ़ो, सबको दे रहे यह आवाज।

- पं. मुकेश वशिष्ट (कुरूक्षेत्र)

शर्मिन्दगी ! शर्मिन्दगी !!

—गीता मनीषी
स्वामी श्रीज्ञानानन्द जी महाराज

चोला मिला था इन्सां का करने को क्या तुझको भला।
लेकिन किया क्या तूने इससे, सोच तो इक पल जरा॥
विषयों में खो दी हाय, यह अनमोल तूने जिन्दगी।
प्रभु भजन न कुछ भी किया, शर्मिन्दगी! शर्मिन्दगी॥

अमृत को छोड़कर सदा करता रहा विषपान तूँ।
चहुँ ओर से जब दुःख मिले सोचे कि अब हाय! क्या करूं॥
भूला रहा प्रभु को आजीवन, की न उसकी बन्दगी।
दुःखों की राह पे चल पड़ा, शर्मिन्दगी! शर्मिन्दगी॥

करना था जो वह न किया, न करने योग्य ही करे।
कीकर के बोये पेड़, इच्छा आमों की मन में धरे॥
जैसा किया वैसा भरे, बोये जो काटे वैसा ही।
किये न नेक कर्म कुछ, शर्मिन्दगी! शर्मिन्दगी॥

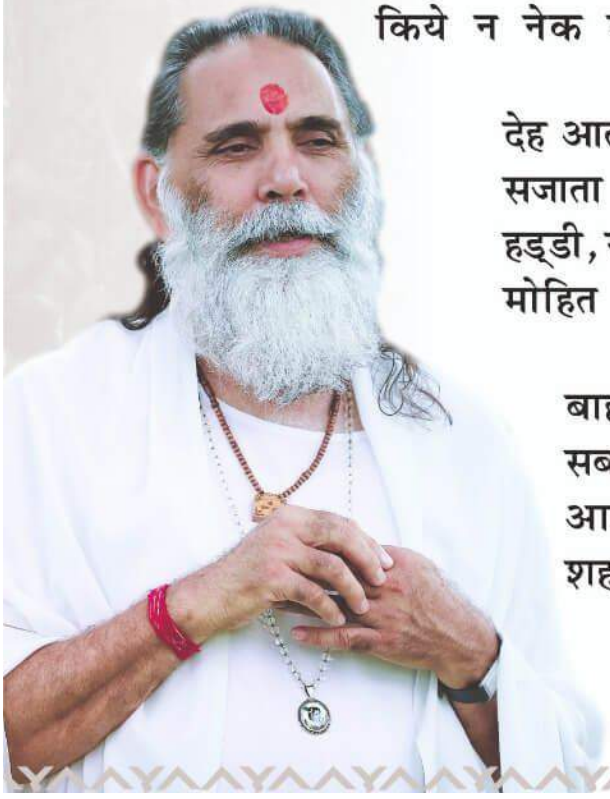

देह आत्मा से चलती क्या सोचा कभी इस बात को।
सजाता रहा इसको ही पर, देती न सदा साथ जो॥
हड्डी, रक्त, मल-मूत्र मज्जा, भरी है नख-शिख गन्दगी।
मोहित रहा इसमें ही तूँ, शर्मिन्दगी! शर्मिन्दगी॥

बाहर भटकता है सदा, भीतर न देखा-झाँक के।
सब कुछ है 'किंकर', तुझमें देख ज्ञान की तूँ आँख से॥
आवरण हैं इतने पड़े, जो देखने न दें कभी।
शहन्शाह भिखारी बन गया, शर्मिन्दगी! शर्मिन्दगी॥

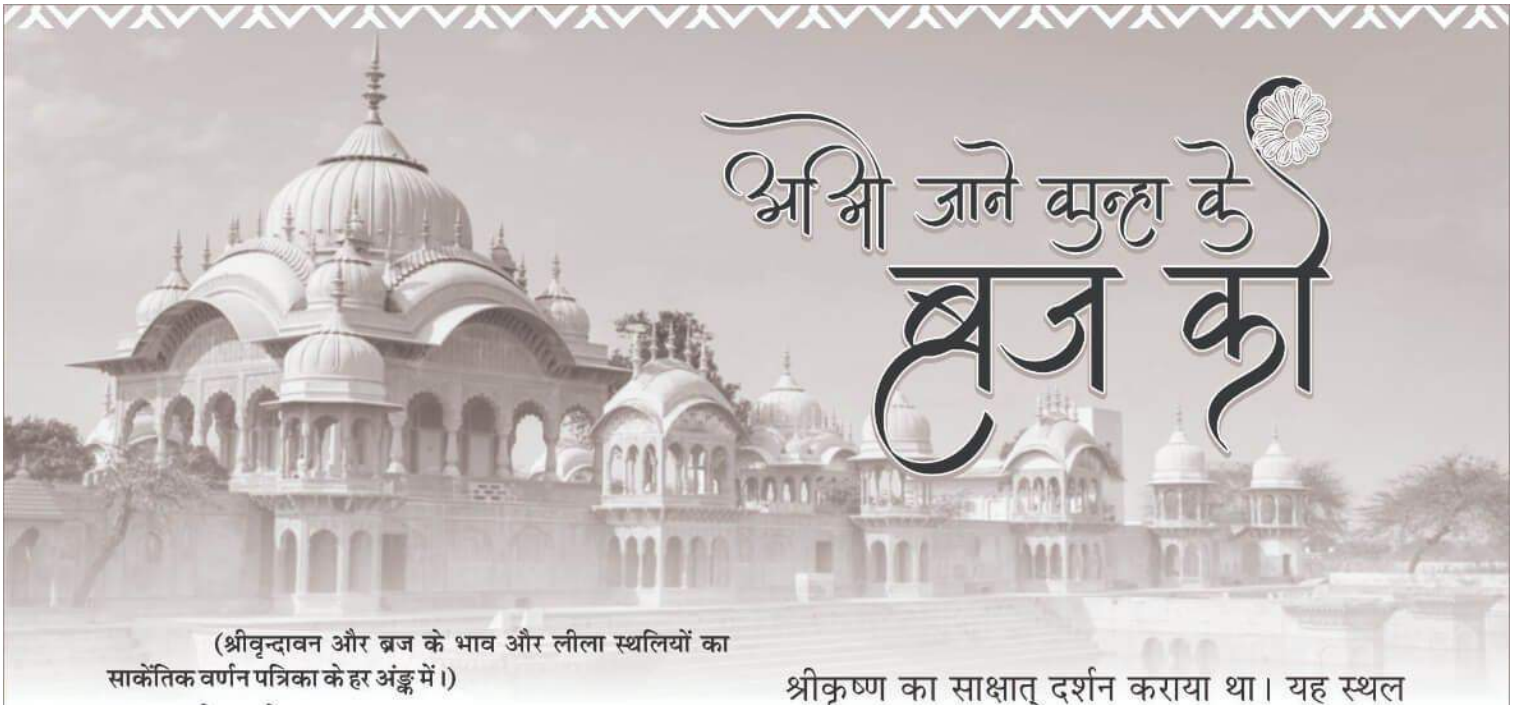

अभी जाने वृन्दा के ब्रज को

(श्रीवृन्दावन और ब्रज के भाव और लीला स्थलियों का साकेंतिक वर्णन पत्रिका के हर अंङ्क में।)

गताङ्क से आगे :—

श्री गिरिराज जी का जिह्वा मन्दिर:- यह मन्दिर राधाकुण्ड के ललिता कुण्ड के पहले आता है। रास चबूतरा के पास से मार्ग है। श्रीराधा गोविन्द मन्दिर के प्रवेश द्वार के समीप स्थित है। गोपी कूप में जल खींचते समय गिरिराज जी की यह शिला निकली थी। यह शिला ही जिह्वा है। ललिता कुण्ड के ठीक बाद बायीं ओर गोपीकूप आता है।

हम श्री राधा कुण्ड के चारों ओर स्थित मन्दिरों का दर्शन करते हुए आगे बढ़ेंगे। संगम स्थल जाकर दोनों कुण्ड में आचमन करेंगे। आचमन करते समय सावधान रहेंगे। पैर फिसल न जायें। घाट पर काई बहुत है।

परिक्रमा मार्ग में बढ़ेंगे तो बायीं तरफ वृन्दावन जाने का मार्ग आयेगा। यहाँ से लगभग 20 किमी. दूर पर है।

कुसुम सरोवर:- परिक्रमा मार्ग में दायीं तरफ कुसुम सरोवर स्थित है। यहाँ श्री कृष्ण ने राधाजी की चोटी गूँथी थी और फूलों से शृंगार किया था। श्री राधा जी भी सखियों के साथ आकर यहाँ फूलों का संग्रह कर माला बनाती थी और कृष्ण को पहनाती थी। इस कारण इसका नाम कुसुम सरोवर पड़ा। द्वापर युग के अन्त में श्रीउद्धवजी ने इस कुसुम सरोवर के निकट ही लगातार एक मास तक श्री भागवत कथा श्रवण करा कर श्री ब्रजनाभ एवं द्वारका की रानियों को श्रीकृष्ण का साक्षात् दर्शन कराया था। यह स्थल दर्शनीय है।

नारद कुण्ड:- परिक्रमा मार्ग में बायीं तरफ एक रास्ता गया है। मार्ग से 300 मीटर दूरी पर नारद कुण्ड है। कुसुम सरोवर की सीमा समाप्त होने पर सामने नारद कुण्ड का मार्ग दिखाई देगा। यहीं पर श्री वृन्दा देवी ने नारद जी को श्री कृष्ण भगवान् की अष्टकालीन सेवा का वर्णन सुनाया था। कुण्ड के पास एक मन्दिर है जिसमें नारद जी खड़े हैं। यहाँ के शनि मन्दिर के पास एक 'पारस पीपल' का वृक्ष है। इसकी परिक्रमा का भी बड़ा महत्व है।

श्यामकुटी:- परिक्रमा मार्ग में दायें हाथ की ओर श्यामकुटी के लिये मार्ग है। श्यामकुटी के प्रवेश द्वार के बाहर अपने दायें हाथ की ओर भूमि पर गिरिराज जी की एक शिला है। शिला पर श्री कृष्ण जी के एक चरण का पंजा, दूसरे चरण की एड़ी, गाय का खुर एवं दूध के एक कटोरे का चिह्न है। प्रवेश द्वार के अन्दर एक श्याम-तमाल का वृक्ष है। वृक्ष पर कनक बेल लिपटी हुई है। यहाँ पर रत्न कुण्ड, रत्न बेदी, रत्न सिंहासन है। सिंहासन पर युगल स्वरूप श्री कृष्ण हैं।

ग्वाल पोखरा :- परिक्रमा मार्ग पर दायें हाथ की ओर यह ग्वाल पोखरा है। श्याम कुटी भी पास में है। गौ चारण के समय इस पोखर में श्री कृष्ण अपनी गायों को जल पिलाते थे। यहाँ पर सखाओं के साथ श्री कृष्ण ने अनेक लीलाएं की हैं। आजकल यहाँ कुण्ड बन गया है।

क्रमशः

साभार : सत्यनारायण, केशव धाम, श्रीवृन्दावन

समाचार दर्शन

गुरु से ऊंचा कोई पद नहीं : मुरारी बापू

कुरुक्षेत्र की धरा का महत्व स्वर्ग से भी अधिक : मुरारी बापू

FRI,25 NOVEMBER 2022
EDITION: KURUKSHETRA KESARI, PAGE NO. 1

क्या त्याग से शांति मिलती है : जिज्ञासु

कुत्ता पाल सकते हैं तो गाय क्यों नहीं : मुरारी बापू

'समता व सद्भावना का अनूठा संदेश देकर गई श्री राम कथा मानस गीता'

TUE,29 NOVEMBER 2022
EDITION: ROHTAK KESARI, PAGE NO. 2

देश के प्रमुख संतों की सन्निधि में हजारों श्रद्धालुओं ने श्रवण की कथा

जब गीता मनीषी ने परोसा बापू को प्रसाद

9 दिवसीय श्री राम कथा मानस गीता में राजनेताओं ने भी की श्रवण कथा

नित्यप्रति बरसता रहा भजन रस

'स्वर्ग से अधिक कुरुक्षेत्र की धरा का महत्व'

कथावाचक मुरारी बापू ने बताई धर्मनगरी की महिमा, हरियाणा के गृह मंत्री समेत कई संतों ने की शिरकत

मुरारी बापू।

रामायण जी की आरती करते गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज व अन्य संत।

...क्षेत्र। कुरुक्षेत्र की धरा गीता की जन्मभूमि, ...भूमि और तीर्थ भूमि भी यही है। युद्ध के दौरान गीता यहां प्रकट हुई, इसलिए गीता की युद्ध भूमि भी यही है। यहां गीता के प्रकट होने से जागृत काल प्रकट हुआ, इसलिए इस भूमि का महत्व स्वर्ग से भी अधिक है। ये विचार प्रख्यात कथावाचक एवं संत मुरारी बापू ने श्रीराम कथा के छठे दिन वीरवार को व्यक्त किए।

...कथा अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव पर गीता ...षी स्वामी ज्ञानानंद के सान्निध्य एवं गीता ...न संस्थानम के तत्वावधान में मेला ग्राउंड में ...योजित की जा रही है। इस दौरान संत मुरारी ...बापू द्वारा गाए गए भजन 'सभी मस्त हैं कौन ...किसको संभाले, जिसे देखिए लड़खड़ाने लगा ...इस दौरान नशे में जमाना, जमाने में हम, ...पर भी इल्जाम आने लगा है। सभी मस्त हैं...

इस अवसर पर मुरारी बापू ने कहा भगवान कृष्ण सामर्थ्य भी देते हैं और पुरुषार्थ करने की शक्ति भी प्रदान करते हैं। उन्होंने भगवान की वंदना में किसी कविता की पंक्तियां गुनगुनाते हुए कहा कि शायरी तो सिर्फ बहाना है, असली मकसद तो उसे रिझाना है। मुरारी बापू ने जीवन में गुरु के महत्व के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि हमारा स्थूल शरीर हमारे माता-पिता लेकिन हमारा सूक्ष्म शरीर हमारे गुरु के भजन की देन है। कथा से पूर्व महामंडलेश्वर स्वामी धर्मदेव एवं भागवत भास्कर कृष्ण चंद्र ठाकुर ने भी प्रवचन किए। इस अवसर पर केडीबी मानद सचिव मदन मोहन छाबड़ा, डॉ. गुलशन ...

सतीश गुप्ता, विजय नरूला, दिनेश ग्रोवर, उपेंद्र सिंह, रविंद्र चोपड़ा, हंसराज सिंगला और कई श्रद्धालु उपस्थित थे।

अशांति देने वाली चीज ही त्यागें तो मिलेगी शांति : महाराष्ट्र के एक श्रद्धालु ने मुरारी बापू से पूछा कि क्या त्याग से शांति मिलती है। इस पर बापू ने कहा कि सब कुछ त्याग देने से कभी शांति नहीं मिलती। केवल उसका त्याग करना चाहिए, जो हमें अशांति दे रहा है। उन्होंने कहा कि अशांति देने वाली वस्तु का त्याग करने से शांति स्वतः मिल जाती है। मुरारी बापू ने कहा कि अधिक प्रतिष्ठा और जरूरत से ज्यादा वाह-वाह भी अशांति पैदा ...

गृह मंत्री अनिल विज कथा सुनने पहुंचे

कथा के छठे दिन प्रदेश गृह एवं स्वास्थ्य मंत्री अनिल विज भी कथा सुनने विशेष रूप से पहुंचे, जहां गीता ज्ञान संस्थानम की ओर से जीओ गीता इंग्लैंड के महासचिव अनीत कपूर, हैप्पी चावला एवं बृज गुप्ता ने उनका स्वागत किया।

...वाह साधु से उसका भजन भी छुड़वा देती...

श्रीराम कथा में पहुंच रहे संत : श्रीराम कथा मानस गीता का श्रवण करने के लिए संतों का भी मेला लग रहा है। वीरवार को गुरुग्राम से महामंडलेश्वर स्वामी धर्मदेव महाराज, ... से भागवत भास्कर कृष्ण चंद्र ठाकुर, ... से बाबा जसदीप सिंह, पटना साहिब से जत्थेदार ज्ञानी इकबाल सिंह, भद्रकाली कुरुक्षेत्र के पीठाधीश्वर सतपाल महाराज, पानीपत से स्वामी शिव नाथ महाराज ... यहां पर उनका आयोजक मंडल के ... मित्तल, किशोर अग्रवाल, अशोक चावला, सुदर्शन अग्रवाल, राजेश पजनी व सूरज ...

भवसागर से पार जाने का पोत है गुरु : मुरारी बापू

THU,24 NOVEMBER 2022
EDITION: KURUKSHETRA KESARI, PAGE NO. 2

संतों के साथ मंत्री, सांसद व विधायक ने श्रवण की कथा

बापू का चिंतन और संवाद अनूठी प्रेरणा : स्वामी ज्ञानानंद

कथा में उपस्थित श्रद्धालुओं का सैलाब।

बिना कर्म के धर्म विधुर है : मुरारी बापू

SAT,26 NOVEMBER 2022
EDITION: KURUKSHETRA KESARI, PAGE NO. 2

श्री राम कथा करते मुरारी बापू व रामायण जी की आरती के दौरान श्रद्धालुओं की भारी भीड़।

गीतामय हुई श्री राम कथा मानस गीता

कुरुक्षेत्र, 25 नवम्बर (पंकेस) : महामंडलेश्वर गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज के सान्निध्य एवं गीता ज्ञान संस्थानम् के तत्वाधान में मेला ग्राउंड में आयोजित की जा रही श्री राम कथा मानस गीता के सप्तम दिवस के अवसर पर गीता कुंज कुरुक्षेत्र से ब्रह्मलीन स्वामी गीतानंद भिक्षु महाराज की शिष्या स्वामी मुक्तानंद महाराज, गुरुद्वारा श्री पटना साहिब से जत्थेदार ज्ञानी इकबाल सिंह महाराज एवं महामंडलेश्वर महंत कपिल पुरी महाराज के साथ अनेक संतों का आगमन हुआ।

श्री राम कथा मानस गीता के आयोजक मंडल की ओर से किशोर अग्रवाल, अशोक चावला, डा. सुदर्शन अग्रवाल, प्रदीप मित्तल, बृज गुप्ता एवं जीओ गीता इंग्लैंड के महासचिव अनीत कपूर ने फूल मालाओं से संतों का स्वागत किया। श्री राम कथा मानस गीता में विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए हरियाणा भाजपा के पूर्व प्रदेशाध्यक्ष रामबिलास शर्मा, पूर्व मंत्री मनीष ग्रोवर, विधायक सुभाष सुधा एवं अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव ऑस्ट्रेलिया के कोऑर्डिनेटर सेवा सिंह का गीता ज्ञान संस्थानम् की ओर से कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड के मानद सचिव मदन मोहन छाबड़ा, विजय नरूला, उपेंद्र सिंघल एवं सतीश गुप्ता ने स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया। तत्पश्चात संतों के साथ विशिष्ट अतिथियों एवं श्री राम कथा मानस गीता के मुख्य यजमान वेद प्रकाश सिंगला एवं राजकुमार सिंगला ने मुरारी बापू को पुष्प भेंट कर व्यासपीठ को नमन किया। श्री राम कथा मानस गीता का सातवां दिन पूरी तरह से भगवान श्री कृष्ण की दिव्य वाणी श्रीमद्भगवद्गीता के श्लोकों से गुंजायमान रहा।

कथा के प्रारंभ से ही गीता को केंद्र में रखकर जब मुरारी बापू ने संवाद करना शुरू किया तो अंत तक श्री राम कथा मानस गीता का वातावरण गीतामय बना रहा। मुरारी बापू बोले कि गीता में भगवान कृष्ण अर्जुन को कहते हैं कि हे अर्जुन, गीता मेरा हृदय है। उन्होंने कहा कि 700 श्लोकों की श्रुति का फल है स्मृति। जीवन में कभी ऐसे क्षण भी आते हैं जब व्यक्ति श्रुति में नहीं बोल रहा होता बल्कि अपने गुरु के दिए हुए फल में बोल रहा होता है। श्रवण इंद्री को साधन बनाकर हम सुनते हैं, पर घटना तो तब घटती है जब श्रुति स्मृति बनती है। बापू ने कहा कि धर्म कृष्ण है और कृष्ण धर्म। गीता के आरंभ में धर्म शब्द है और गीता के अनुसार ज्ञान, भक्ति और कर्म से ही धर्म है। धर्म ज्ञान है, धर्म कर्म है और धर्म ही भक्ति है।

कथा के अंत में संतों के साथ विशिष्ट अतिथियों एवं पंडाल में उपस्थित हजारों की संख्या में श्रद्धालुओं ने खड़े होकर बड़े भाव से रामायण जी की आरती की। इस अवसर पर विजय पाल सिंह, महेंद्र सिंगला, नीतीश सेन भाटिया, धीरज गुलाटी, मंगतराम सिंगला, योगेश चावला, राजू भट्ट, नरेंद्र मोंगा एवं केशव चावला सहित भारी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे।

पंजाब केसरी WED,07 DECEMBER 2022
EDITION: KURUKSHETRA KESARI, PAGE NO. 2

गीता महोत्सव के साथ, विश्व में भारत की साख

मुख्यमंत्री की इच्छाशक्ति व सरकारी प्रयासों के बीच की धुरी : गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज

शाहबाद मारकंडा, 6 दिसम्बर (राजन सपड़ा) : श्रीमद्भगवद्गीता की प्राकट्य स्थली धर्मधरा कुरुक्षेत्र का नाम आज विश्व मानचित्र पर शोभायमान हो रहा है। वह धरा जहां भगवान कृष्ण ने अर्जुन को माध्यम बनाकर पूरे विश्व को गीता का संदेश दिया, ऐसी पावन धरा पर प्रतिवर्ष मनाया जाने वाला गीता जयंती उत्सव आयोजन की दृष्टि से आज एक ऐसा वटवृक्ष बन गया जिसकी छाया केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के कोने-कोने में शीतलता प्रदान कर रही है।

गीता जयंती उत्सव को विश्व के पटल पर लाने में निस्संदेह हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल की दृढ़ इच्छाशक्ति और सरकार के अथक प्रयासों का अहम योगदान है। लेकिन मुख्यमंत्री की उस इच्छाशक्ति और सरकारी प्रयासों के बीच गीता जयंती उत्सव को अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में बदलने में गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज ने भी एक धुरी के रूप में काम किया है। स्वामी ज्ञानानंद महाराज के नेतृत्व में आज अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के रूप में भगवान कृष्ण की दिव्य वाणी विश्व के कोने-कोने में गुंजायमान हो

48 कोस के सभी तीर्थों पर मनाई गई गीता जयंती : विजय नरूला

कुरुक्षेत्र विकास बोर्ड के सदस्य विजय नरूला ने बताया कि पिछले 7 वर्षों से गीता महोत्सव बड़े ही उच्च स्तर पर मनाया जा रहा है। जिसके चलते कुरुक्षेत्र में आने वाले पर्यटकों की बहुत बड़ी संख्या में वृद्धि हुई है। बोर्ड द्वारा इस बार गीता जयंती 48 कोस के अंदर आने वाले सभी तीर्थों पर मनाई गई है। गीता महोत्सव का प्रतिवर्ष विस्तार निश्चित ही सनातन परंपराओं के प्रचार प्रसार के साथ-साथ पर्यटन की दृष्टि से भी कुरुक्षेत्र के विकास में भूमिका निभाएगा।

'श्री राम कथा मानस गीता' सोने पर सुहागा: अवशीष शर्मा

राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय मंगोली जटान के प्राध्यापक अवशीष शर्मा ने अपना कथन प्रस्तुत करते हुए कहा कि इस बार अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव

ब्लॉक स्तर पर नहीं हुआ कोई आयोजन : अशोक गुप्ता

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता अशोक गुप्ता ने अपना वक्तव्य रखते हुए कहा कि अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव को लेकर जहां जिला स्तर पर

विदेशों में गीता जयंती का उत्साह चरम पर : मलिक विजय आनंद

सितम्बर माह में कनाडा में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव का हिस्सा रहे जीओ गीता के संरक्षक मलिक विजय आनंद ने अपना अनुभव सांझा करते हुए कहा कि आज गीता महोत्सव को लेकर विदेशों में रह रहे भारतीयों के साथ-साथ वहां के श्रद्धालुओं में भी काफी उत्साह व्याप्त है। उन्होंने बताया कि कनाडा में अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के उपलक्ष्य में निकाली गई श्रीमद्भगवद्गीता यात्रा के दौरान कनाडा की सड़कों पर

संत सम्मेलन व बच्चों द्वारा सामूहिक गीता पाठ रहे मुख्य आकर्षण : जगमोहन मनचंदा

श्री मारकंडेश्वर महादेव शिव मंदिर के प्रधान जगमोहन मनचंदा ने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाले संत सम्मेलन एवं 18 हजार बच्चों द्वारा सामूहिक गीता पाठ महोत्सव के विशेष आकर्षण रहते हैं।

संत सम्मेलन में जहां देश के प्रमुख संत एक ही मंच से भगवान की दिव्य वाणी

पंजाब केसरी THU,01 DECEMBER 2022
EDITION: AMBALA, PAGE NO. 5

गीता जयंती महोत्सव

2 बड़े धार्मिक संतों के 'सान्निध्य' में धर्म क्षेत्र में बना आध्यात्म का अद्भुत 'संगम'

संत मोरारी बापू ने श्रीराम कथा व स्वामी ज्ञानानंद ने गीता के उपदेश से देश-विदेश के श्रद्धालुओं को किया भावविभोर

वर्तमान के दौर को यदि आपाधापी वाला समय कहा जाए तो कतई दोराय नहीं है, क्योंकि आज हर इंसान अपनी जरूरतों को पूरा करने अथवा अपने परिवार का भरण पोषण करने में ही जीवन व्यतीत करता दिखाई दे रहा है। ऐसी दास्तां कोई आम अथवा खास की ही नहीं बल्कि समाज के सभी वर्गों की ही है। ऐसे में तनाव बढ़ना भी स्वाभाविक है लेकिन गीता एक ऐसा साधन है जो जीविका के लिए नहीं बल्कि जीवन के लिए बहुपयोगी है।

लोगों के जहन में गीता के प्रति इस सार को समझाने के लिए स्वामी ज्ञानानंद जी महाराज जहां पिछले 30 वर्षों से देश के विभिन्न राज्यों के साथ विदेशों में भी गीता का ज्ञान लोगों को बांटने के साथ-साथ गीता का सार आमजन को समझाने को प्रयासरत हैं तो वहीं मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर भी प्रदेश में धर्म संस्कृति को बढ़ावा देने और लोगों खासकर युवाओं में गीता के प्रति अलख जगाने के लिए तरह तरह के आयोजन करने में जुटे हुए हैं।

इसी की बानगी है कि श्रीकृष्ण की भूमि कुरुक्षेत्र में सरकार की ओर से अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव आयोजित किया जा रहा है और इसको भव्य स्तर पर मनाने की परम्परा भी खट्टर सरकार ने ही 2015 से शुरू की थी जो लगातार जारी है। इस आयोजन की मार्फत धर्म प्रति जागरूक करने साथ साथ लोगों को गीता के असली मर्म बारे भी बोध करवाया जा रहा है। आयोजन दौरान संत मोरारी बापू व स्वामी ज्ञानानंद की एक साथ मौजूदगी से कुरुक्षेत्र में आध्यात्म का अद्भुत संगम भी बना। गीता को आत्मसात किए हुए गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद जी महाराज स्वयं इस बात को पुख्ता करते हैं कि सही मायने में गीता ही मनुष्य को जीना सिखाती है। इस आयोजन के दौरान कुरुक्षेत्र को पुण्य धरा, दिव्य धरा व सेवा धरा का नाम देकर कुरुक्षेत्र को विश्व पटल पर सम्मान देने की भी अहम पहल हुई।

गीता जयंती पर हर घर में हो गीता का सम्मान : मोरारी बापू : अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव दौरान 9 दिनों तक चली श्रीराम कथा में सद्भाव, गीता प्रति भाव व धर्म से लगाव का अद्भुत संगम देखने को मिला। जहां संत मोरारी बापू जी ने श्रीराम कथा से श्रद्धालुओं को भाव विभोर किया तो वहीं स्वामी गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद जी महाराज के सानिध्य में मानस गीता के रूप में हुई इस कथा दौरान भारतीय सनातन परम्परा के दो महान ग्रंथ रामायण व गीता का अद्भुत समन्वय भी देखने को मिला। संत मोरारी बापू व्यास पीठ से विश्व भर के श्रद्धालुओं से आह्वान किया कि इस बार गीता जयंती उत्सव हर घर में

कुरुक्षेत्र में चल रहे अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव के दौरान संत मोरारी बापू को अपनी पुस्तक गीता प्रेरणा की प्रति भेंट करते हुए स्वामी ज्ञानानंद जी महाराज। (फाइल फोटो)

मनाया जाए और यह भी कहा कि यही मेरी वास्तविक दक्षिणा होगी कि हर घर में ही गीता का सम्मान हो। गीता जी को लाएं और दो पुष्प चढ़ाने के साथ 2 दीपक भी गीता जी के समक्ष जलाएं।

खास बात ये रही कि 9 दिनों तक संत मोरारी बापू के मुखारविंद से जारी इस कथा के मौके पर अनेक संत भी मौजूद रहे। इनमें स्वामी अवधेशानंद जी महाराज, गुरु शरणानंद जी, राजेंद्र दास जी, स्वामी परमात्मानंद जी, गोविंद देव गिरी जी, ब्रह्मस्वरूप जी, शंकराचार्य स्वामी ज्ञानानंद तीर्थ जी प्रमुख रूप से शामिल हुए। आयोजन दौरान सद्भाव की इससे बड़ी पहल क्या होगी कि गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद जी की प्रेरणा से अनेक प्रमुख सिख संतों का भी कुरुक्षेत्र आगमन हुआ। इन सिख संतों में संत राजेंद्र सिंह, संत बाबा भूपेंद्र सिंह, संत बाबा जोगा सिंह, संत बाबा जसदीप सिंह, जत्थेदार ज्ञानी इकबाल सिंह प्रमुख रूप से शामिल हैं।

प्रवचनों से मिलता है जीवन का उजाला: धर्मनगरी कुरुक्षेत्र 19 नवम्बर से शुरू हुए अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में बीते दिवस देश की महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू भी पहुंची और इस अवसर पर प्रदेश के राज्यपाल बंडारू दत्तात्रेय व मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर भी मौजूद थे। 6 दिसम्बर तक चलने वाले इस अंतर्राष्ट्रीय गीता महोत्सव में स्वामी ज्ञानानंद जी महाराज ने मनुष्य को जीवन जीने की कला के बारे में बताया तो वहीं उनके प्रवचनों से जीवन में छाए अंधेरे को दूर करने की विधि का भी बोध हो रहा है। ज्ञानानंद जी ने कहा कि गीता जहां जीवन सिखाती है तो वहीं इससे तनावमुक्त जीवन की अचूक प्रेरणा भी मिलती है। गीता मनुष्य को संकीर्ण नहीं बल्कि उदार बनाती है। स्वामी ज्ञानानंद ने कहा कि अक्सर लोग सारा

भागवत गीता धर्म ग्रंथ ही नहीं बल्कि जीवन ग्रंथ है: स्वामी ज्ञानानंद

स्वामी ज्ञानानंद जी महाराज ने भी श्रद्धालुओं को कहा कि जिस तरह से मुख्यमंत्री मनोहर लाल खट्टर के सद्भाव व गीता जी के भाव का प्रचार पिछले कई वर्षों से देश के साथ-साथ विदेशों में भी किया जा रहा है, उससे अब हर व्यक्ति गीता को लेकर उत्साहित नजर आता है। भगवत गीता एक ऐसा शास्त्र है जो धर्म ग्रंथ ही नहीं बल्कि जीवन ग्रंथ है। महात्मा गांधी ने गीता को 'बुक ऑफ आनसर्स' की संज्ञा दी थी।

आज का ऐसा दौर है जहां शिक्षा को धनोपार्जन मान लिया गया है, शिक्षा जीवन के लिए नहीं बल्कि आजीविका के लिए ही गई है मगर गीता जीविका के लिए नहीं अपितु जीवन के लिए है। आजीविका के तो साधन बहुत हो गए हैं और इस भागमभाग या प्रतिस्पर्धा के दौर में इन बढ़ते साधनों के साथ साथ विकास विकारों ने भी मनुष्य को घेर लिया है और इसी कारण इंसान की बुद्धि बिगड़ गई। ऐसे में गीता ही एक ऐसा साधन है जो जीवन को तनावमुक्त रखता है।

उन्होंने उदाहरण दिया कि जिस प्रकार धर्मयुद्ध के दौरान कुरुक्षेत्र में कौरव व पांडव अपनी अपनी सेनाओं को लेकर आमने सामने खड़े थे तो उसी वक्त अर्जुन का मन डांवाडोल हो गया, वह कई विकारों से घिर गया, हताश हो गया या यूं कह लीजिए कि तनाव में आ गया तो उस वक्त भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का ही उपदेश देकर जहां तनाव और विकारों को दूर करते हुए उसे मजबूत किया तो वहीं अर्जुन भी एक नए संचार के साथ खड़ा हो गया। इस प्रसंग से भी खुद ही अनुमान लगाया जा सकता है कि आखिर मनुष्य को गीता क्यों पढ़नी चाहिए।

जीवन ईर्ष्या, तृष्णा, लोभ व द्वेष में निकाल लेते हैं मगर हैरानी की बात तो ये है कि वृद्धावस्था में भी यही विकार घेरे रहते हैं तो अनुमान लगाईये कि असल में हम जीवन को जी कैसे रहे हैं? उन्होंने उदाहरण दिया कि जिस प्रकार धृतराष्ट्र उस पड़ाव में आने के बाद भी जब कल्याण के मार्ग को नहीं अपनाता और खुद एक लोभ के वशीभूत होकर रह जाता है तो उसका परिणाम क्या होता है? ऐसे में मनुष्य को ऐसे पात्रों से सबक लेना चाहिए और गीता के मूल मंत्र को अपने जीवन में व्यवहारिक रूप देना चाहिए।

-संजय अरोड़ा

पंजाब केसरी WED,14 DECEMBER 2022
EDITION: AMBALA, PAGE NO. 5

दिल्ली एयरपोर्ट के सभी टर्मिनल्स पर दिखा अंतर्राष्ट्रीय गीता जयंती का प्रभाव

समूचे विश्व को गीता प्रेरणाओं की आवश्यकता : स्वामी ज्ञानानंद

शाहबाद मारकंडा, 13 दिसम्बर (राजन सपड़ा): अभी हाल ही में गीता की उपदेश स्थली कुरुक्षेत्र में संपन्न हुए अंतर्राष्ट्रीय गीता जयंती महोत्सव का प्रभाव दिल्ली एयरपोर्ट के सभी टर्मिनल्स पर भी देखने को मिला।

गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज के सान्निध्य में देश एवं विदेशों में धार्मिक एवं सामाजिक गतिविधियों में अग्रणी संस्था जीओ गीता के सौजन्य से दिल्ली एयरपोर्ट पर अंतर्राष्ट्रीय गीता जयंती के उपलक्ष्य में गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज, मानस मर्मज्ञ संत मुरारी बापू, राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, पूर्व राष्ट्रपति ए.पी.जे. अब्दुल कलाम एवं शहीद भगत सिंह के श्रीमद्भगवद्गीता के प्रति उनके भाव को संदेश के रूप में प्रदर्शित किया गया।

दिल्ली एयरपोर्ट पर उपरोक्त विभूतियों के संदेश पर जानकारी देते हुए गीता मनीषी स्वामी ज्ञानानंद महाराज ने कहा कि गीता प्रेरणाओं की आवश्यकता समूचे विश्व को है।

गीता विश्व का एकमात्र ऐसा ग्रंथ है, जिसे भगवान ने अपने श्रीमुख से बोला है। उन्होंने कहा कि अंतर्राष्ट्रीय गीता जयंती के अवसर पर दिल्ली एयरपोर्ट पर राष्ट्रपति व प्रधानमंत्री के साथ संतों एवं शहीदों के गीता भाव वास्तव में सनातन संस्कृति एवं परंपराओं से विश्व को अवगत करवाएंगे।

गीता मनीषी ने कहा कि दिल्ली भारत की राजधानी है और दिल्ली एयरपोर्ट पर विश्व के सभी देशों के लोगों का आना जाना रहता है। ऐसे में दिल्ली एयरपोर्ट पर प्रदर्शित श्रीमद्भगवद्गीता के संदेश वैश्विक स्तर पर भारत की वास्तविक पहचान के दर्शन करवाएंगे।

दिल्ली एयरपोर्ट पर गीता संदेश। (राजन सपड़ा)

हिन्दू संस्कृति एक विलक्षण संस्कृति

- म. मं. अर्जुनपुरी जी महाराज

हिन्दू संस्कृति एक विलक्षण संस्कृति है। जिस में वेद, पुराण, उपनिषद् आदि शास्त्र समाहित हैं। ये सब शक्ति के ही तत्व हैं और तत्व ही शक्ति रूप में विद्यमान हैं। किसी भी वस्तु का अस्तित्व तभी तक रहता है जब तक उसमें शक्ति रहती है। सभी तत्व एक होते हुए भी सारांश और विराम में लीन हो जाते हैं। इसे ही ब्रह्मतत्व अथवा शक्ति तत्व कहा गया है। राम, कृष्ण, शंकर, हनुमान, दुर्गा, लक्ष्मी, काली, राधा, सरस्वती ये सभी पूर्ण ब्रह्म हैं जिनकी शक्ति से संसार चलायमान है। इस शक्ति का प्रकाश गुरुजनों की कृपा से ही प्राप्त होता है। गुरुजन अन्त:करण की प्रतिभा को निखारने का प्रयास करते हैं जिससे लक्ष्मी प्राप्त होती है। यह भी सत्य है कि लक्ष्मी का स्वरूप चंचल है, यह किसी के पास नहीं टिकती, परन्तु अनुभव किया गया है कि आवश्यकता पड़ने पर यह सभी कार्य करने में समर्थ है। सन्त व गुरूकृपा से उनके विचारों को सुनकर तथा उन पर मनन कर शक्ति सम्मेलन किया जा सकता है। मुख्य प्रकार से चार ही जीवन के लिए परमपयोगी ईश्वर प्राप्ति के साधन हैं-

(क) **सत्संग:**- मनुष्य को नियमित रूप से सत्संग में जाना चाहिए। इसका प्रभाव अमिट होता है। एक न एक दिन डिग्री तो अवश्य ही मिल जायेगी जो जीवन की शैली को बदलने में सक्षम सिद्ध होगी। कभी तो उस का प्रभाव पड़ेगा ही, भले ही वह समझ में न आता हो।

(ख) **स्वाध्याय:**- जिसका अर्थ है स्वयं का अध्ययन, आत्मज्ञान और आत्मसाक्षात्कार। आत्म परीक्षण करो, अपने से प्रश्न पूछो कि मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? और मुझे कहाँ जाना है, मैं पहले क्या था क्या अब हूँ? उचित और अनुचित क्या है? क्या मुझे 84 लाख योनियों में भ्रमित रहना है? अथवा ईश्वर की चरण-शरण चाहिये। धार्मिक पुस्तकों का अध्ययन और महापुरुषों के चरित्र पढ़ने से रस की प्राप्ति होगी, जिससे अपने इष्ट के प्रति श्रद्धा भाव जागृत होगा। वैद्य की भाँति गुरु भी उपचार करता है और पथ्य निर्देश करता है। गुरु की शरण में जाकर स्वाध्याय के विषय का पता चल सकता है कि कौन सा ग्रन्थ मेरे लिए अच्छा रहेगा। उसी प्रकार जिस प्रकार श्री चैतन्य महाप्रभु ने अपने शिष्य सनातन को बताया था कि उसके लिए श्रीमद्भागवत ग्रन्थ के दशम स्कन्ध का पूर्वार्द्ध अधिक लाभदायक होगा। स्वाध्याय करने में धैर्य की भी आवश्यकता होती है। जीवन में समझौता करना सीखना चाहिये। यदि भोजन में नमक की मात्रा अधिक हो गयी हो तो उसका यह अर्थ नहीं कि भोजन की थाली को ही ठुकरा दो। नमक युक्त तथा नमक विहीन पदार्थों को आपस में मिला कर खाना सीखो।